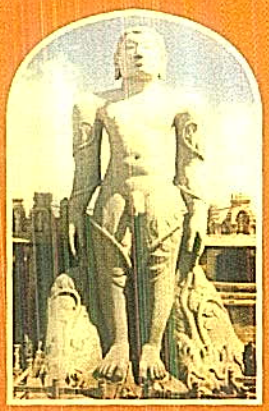

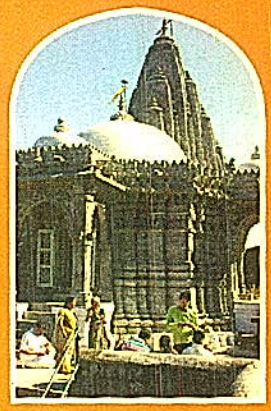

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : V ISSUE : 3 MUMBAI, SEPTEMBER 2014 PAGES : 36 PRICE :₹25

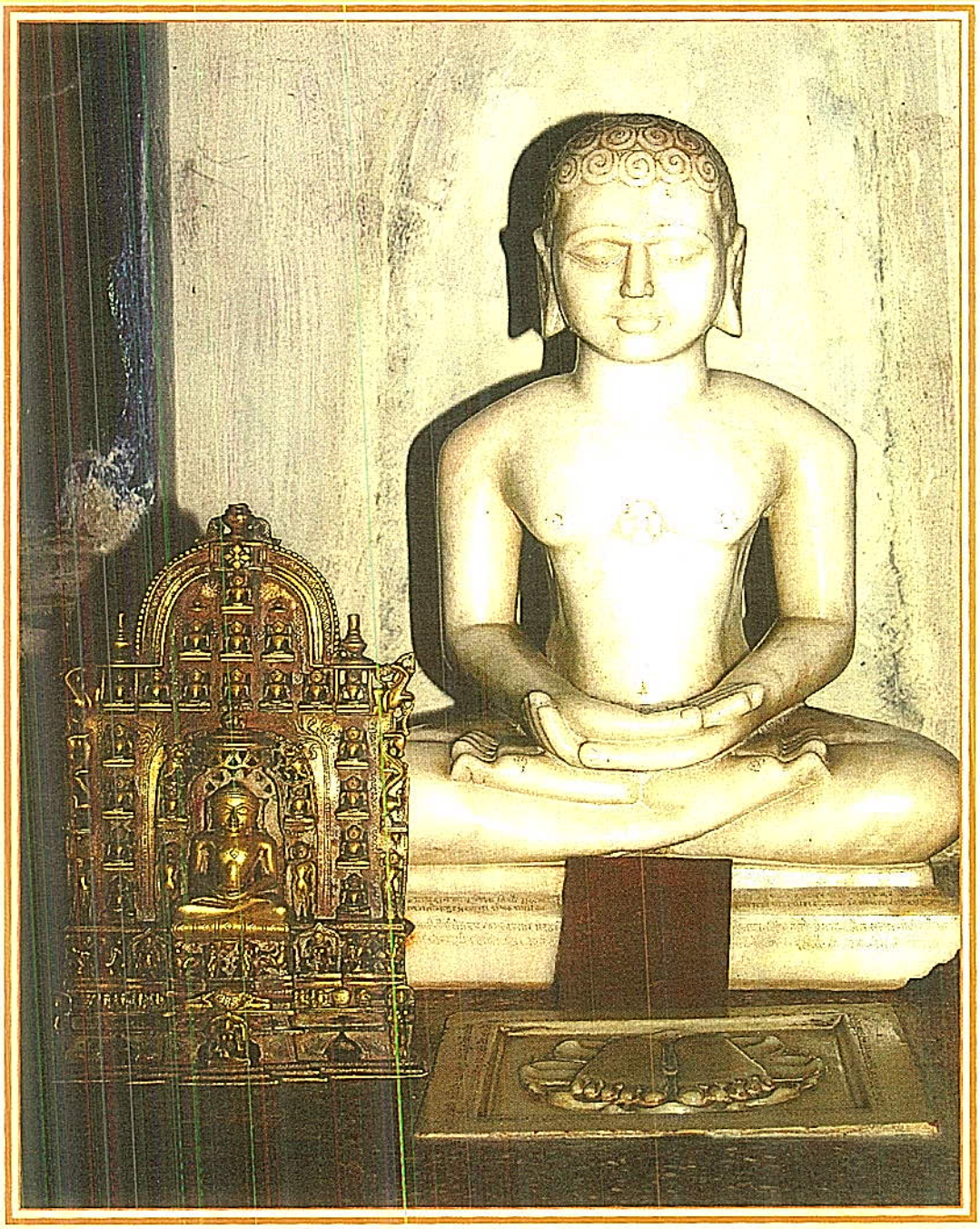

नवमें तीर्थंकर भगवान श्री पुष्पदन्त जी, काकंदी जन्म कल्याणक क्षेत्र, उ.प्र.

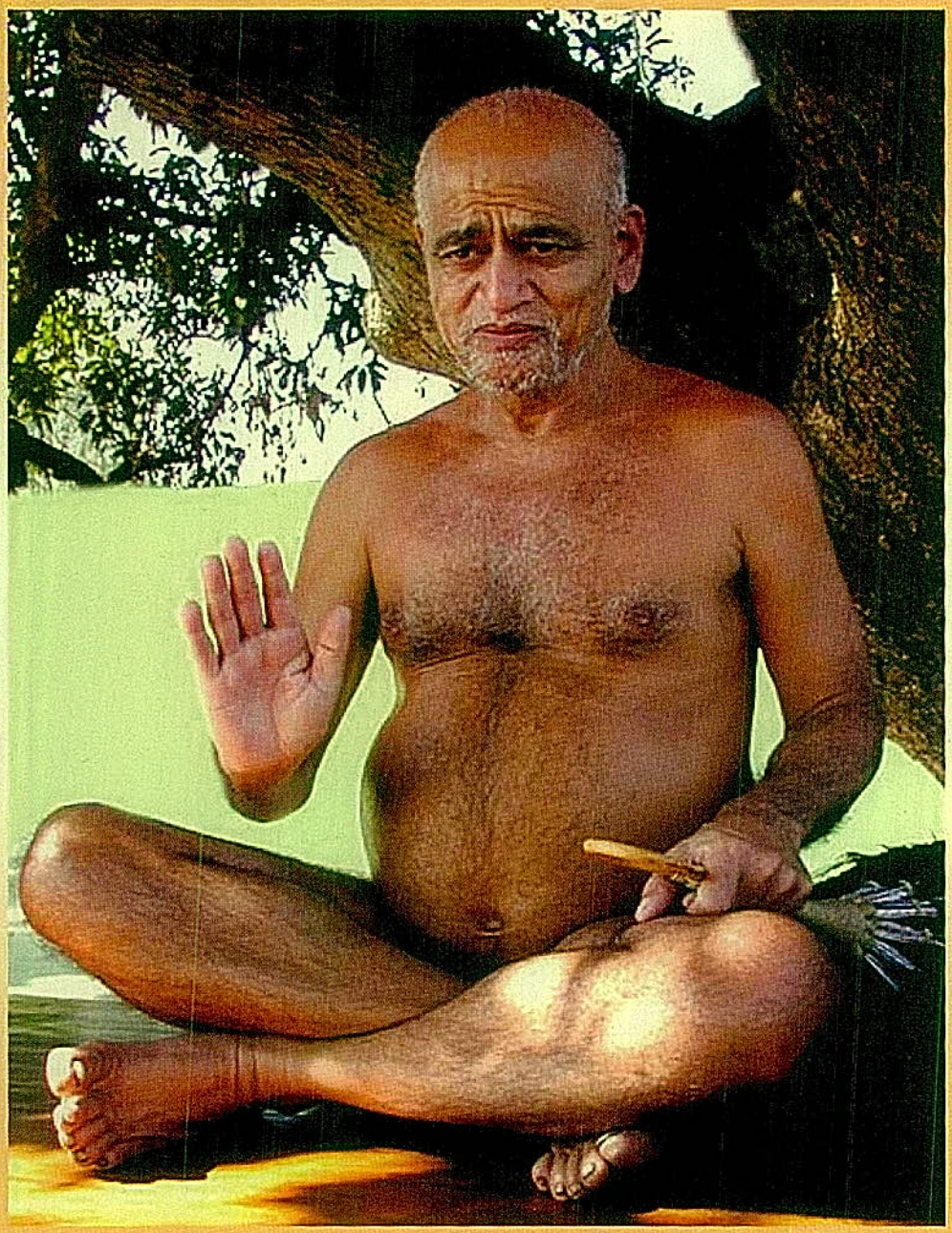

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, 250501-5, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साधर्मी बंधुओं एवं बहिनों,

सादर जय जिनेन्द्र।

हम सभी जिनधर्म के अनुयायियों ने पर्यूषण पर्व को सानंद मनाया एवं अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार दशलक्षण धर्म को समझने एवं आचरण में उतारने का अभ्यास भी किया है।

यही महापर्व है जो हमें सोचने, समझने एवं विवेकपूर्ण चर्या हेतु प्रेरित करता है।

पर्व में पांचों इंद्रियों पर लगाम लगाने वाले 'मन' की भूमिका भी समझने का यत्न किया है, लेकिन ये 'बहुरुपिया-मन' हमेशा मुझे भोग संस्कृति की ओर ही ढकेलता नजर आया। ये 'कलुषित मन' मुझे हमेशा मार्दव धर्म के आसन से नीचे गिराने को व्याकुल दिखा। ये मर्कट-मन ... हमेशा मुझे विचलित करने हेतु तत्पर दिखा, लेकिन गुरु कृपा से मैं बार-बार बचने का यत्न करता रहा।

इसलिए मन-वचन-काय से, जाने-अनजाने में मैंने आपका दिल दुखाया हो एवं आपके मान-सम्मान में कमी की हो तो मुझे अल्पज्ञ समझ कर क्षमा प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है।

दशलक्षण धर्म को अंगीकार करने का सहज-सरल भाव रखते हुए आप सभी से 'उत्तम क्षमा' की याचना करता हूँ ताकि जीवनपर्यंत धर्म एवं तीर्थों की, जीवंत-तीर्थों की सेवा, बिना किसी पद मोह के, करने का संकल्प निभा सकूँ।

'उत्तम क्षमा धर्म की जय हो'

दया धर्म की जय हो

आत्म धर्म की जय हो.

कुछ इस तरह से मैंने अपनी जिंदगी को आसान कर लिया।

कुछ से माफी मांग ली और कुछ को माफ कर दिया ॥

क्षमाभिलाषी,

सुधीर जैन

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 3 सितम्बर 2014

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

जैनत्व के प्रतीक तीन कार्य	5
जैनधर्म के नवम तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त भगवान्	9
मुस्कुराता - कुण्डलपुर	11
भाव को बदलो तो भव बदल जायेंगे	17
अहिंसा/करुणा की महानदशा – चौमासा	20
गलती करना अपराध नहीं, गलती स्वीकार	23
नगरों में धर्मगुरुओं के आगमन की उपयोगिता	24
जन्म जयंती पर याद किये गये संत गणेशप्रसाद जी वर्णी	26
हमारे नये बने सदस्य	31

गिरनार-वंदन का प्रकाशन

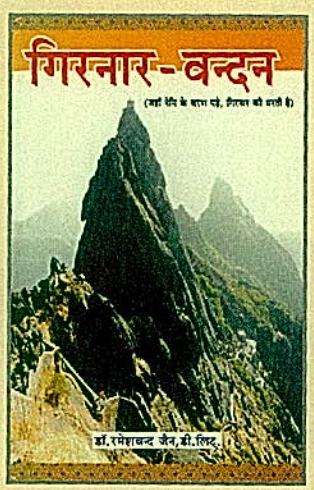

अनेकानेक कृतियों के सिद्धहस्त लेखक एवं ख्याति प्राप्त अनेकांत मनीषी डॉ. रमेशचन्द जैन, डी.लिट्. द्वारा लिखित 'गिरनार वंदन' कृति जैनधर्म के 22वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी गिरनार पर्वत की पाँचवीं टोंक, मुनिश्री प्रद्युम्नकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी चौथी टोंक, मुनिश्री शम्भुकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी तीसरी टोंक और मुनिश्री श्री अनिरुद्धकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी दूसरी टोंक तथा राजकुमारी राजुल की तपोभूमि गिरनार के स्वरूप, इतिहास, विभिन्न ग्रन्थों में आये उल्लेख आदि को अभिव्यक्त करने वाली महत्वपूर्ण पठनीय शोध कृति है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई के द्वारा प्रकाशित यह कृति गिरनार की पावन भूमि को समर्पित एक महनीय अर्घ्य है।

यह ग्रन्थ भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यालय- हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- 400 004 में उपलब्ध है। मूल्य : 120/- रुपये डाक खर्च अलग।

धन के लिए धर्म नहीं होता, धर्म के लिए धन होता है। जहां धर्म है वहीं धन है ।

जैनत्व के प्रतीक तीन कार्य

(जिनेन्द्र देव दर्शन, जलगालन और रात्रि भोजन त्याग)

- डॉ.सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

मनुष्य के रूप में जन्म लेने वाले व्यक्ति को यदि जैन कुल मिल जाये तो यह इस दृष्टि से महत संयोग है कि यदि वह जैन संस्कारों का पालन करेगा तो वह अपने मनुष्य जीवन को पतन से बचा सकता है और अपने मनुष्य भव को सार्थक करते हुये उत्थान की उस पराकाष्ठा को प्राप्त कर सकता है जिसे अध्यात्म की भाषा में मोक्ष कहते हैं। मनुष्य भव पाना दुर्लभ था सो पूर्व जन्म में किये अल्पआरंभ, अल्पपरिग्रह और स्वभावगत मृदुता के परिणाम स्वरूप प्राप्त हो गया- ''अल्पारम्भपरिग्रहत्वम् मानुषस्य'' (तत्त्वार्थ सूत्र-६/१७), ''स्वभावमार्दवं च'' (तत्त्वार्थ सूत्र-६/१८)। जैन कुल पाना दुर्लभ था सो वह भी अहिंसक आचरण और उच्च गोत्र की प्राप्ति में सहायकपर प्रशंसा, आत्मनिन्दा, सद्गुणों का उद्भावन और असद्गुणों का उच्छादन तथा नम्रवृत्ति और अनुत्सेक (निरभिमानता), (तत्त्वार्थ सूत्र-६/२६)को अपनाने के कारण हो गया। अब यह आवश्यक है कि आप और हम जिस स्थिति में बैठे हैं-जैनत्व के साथ, वहाँ से हम पतित न हो सकें। इसलिये जरूरी है कि हम जैनोचित इन तीन कार्यों को दैनंदिन जीवन में आवश्यक रूप से अपनायें-१.जिनेन्द्र देव दर्शन २.जलगालन ३.रात्रि भोजन त्याग।

जिनेन्द्र देव दर्शन

संसार के सभी मनुष्य प्रातः उठकर सर्वप्रथम अपने इष्टदेव का स्मरण करते हैं, जिन्हें वे परमपिता परमेश्वर ब्रह्मा या ईश्वर कहते हैं। भारतवर्ष में मनुष्य अध्यात्म को जीवन का एक अनिवार्य कर्म मानता धर्म उसकी आत्मा में बसता है और क्रियाओं में दिखता है। वह उतना कानून से नहीं डरता जितना कि धर्म से डरता है। पुण्य में संलग्न मनुष्य पाप-कार्यों से निवृत्ति चाहता है। जैन धर्म में परमात्मा को 'जिन' संज्ञा प्राप्त है, क्योंकि इन्द्रियों को जीते बिना जिन संज्ञा प्राप्त नहीं होती। जिन बिम्ब दर्शन प्रत्येक जैनी का प्रमुख कर्त्तव्य माना गया है। समाज में ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है।

रत्नकरण्ड श्रावकाचार के अनुसार-

आप्तेनोच्छिन्नदोषेण, सर्वज्ञेनागमेशिना।
भवितव्यं नियोगेन, नान्यथा ह्याप्तता भवेत्॥(५)॥

अर्थात् नियम से वीतराग, सर्वज्ञ और आगम का ईश ही आप्त होता है, निश्चय करके किसी अन्य प्रकार आप्तपना नहीं हो सकता। यह आप्त ही जिनेन्द्र देव है।

जो करोड़ों सूर्यों के भी अधिक तेज से देदीप्यमान होता है वह देव है, जैसे-अरहन्त परमेष्ठी। अथवा, जो धर्मयुक्त व्यवहार का विधाता है वह देव है। अथवा जो लोक-अलोक को जानता है वह देव है जैसे-सिद्ध परमेष्ठी। अथवा, जो अपने आत्म स्वरूप का स्तवन करता है वह देव है जैसे-आचार्य, उपाध्याय, साधु।

जैन धर्म में नव देवता माने गये हैं-

अरहंतसिद्धसाहूतिदयं जिणधम्मवयण पडिमाहू।
जिणणिलया इदिराए णवदेवता दिंतु मे बोहि॥

अर्थात्पंचपरमेष्ठी(अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु), जिन धर्म, जिन वचन, जिन प्रतिमा और जैन मन्दिर ये नव देवता मुझे बोधि प्रदान करें।

एक सच्चे जैन को चाहिए कि इन राग-द्वेष से परे, इन्द्रियजयी, हितोपदेशी, वीतरागी अरहन्त (सर्वज्ञ) भगवान की प्रशान्त मुद्रा युक्त छवि उसके मन-मस्तिष्क में सदैव विद्यमान रहे। यही कारण है कि संसार में सुख की चाह जिन्हें है वे प्रातः काल उठकर जिनदेवदर्शन करते हैं। आचार्य सकलकीर्ति ने पार्श्वनाथ चरित में लिखा है कि-''जिनेन्द्र भगवान के उत्तम बिम्ब आदि का दर्शन करने वाले धर्माभिलाषी भव्य जीवों के परिणाम तत्काल शुभ व श्रेष्ठ हो जाते हैं। जिनेन्द्र भगवान का सादृश्य रखने वाली महाप्रतिमाओं के दर्शन से साक्षात् जिनेन्द्र भगवान् का स्मरण होता है, निरन्तर उनका साक्षात् ध्यान होता है और उसके फलस्वरूप पापों का निरोध होता है। जिनबिम्ब में समता आदि गुण व कीर्ति, कान्ति व शान्ति तथा मुक्ति का साधनभूत स्थिर वज्रासन और नासाग्रदृष्टि देखी जाती है। इसी प्रकार धर्म के प्रवर्तक जिनेन्द्र भगवान में ये सब गुण विद्यमान हैं। तीर्थंकर प्रतिमाओं के लक्षण देखने से उनकी भक्ति करने वाले पुरुषों को तीर्थंकर भगवान का परम निश्चय होता है इसलिये उन जैसे परिणाम होने से, उनका ध्यान व स्मरण आने से तथा उनका निश्चय होने से धर्मात्मा जनों को महान पुण्य होता है। जिस प्रकार अचेतन मणि, मंत्र, औषधि आदि विष तथा रोगादिक को नष्ट करते हैं, उसी प्रकार अचेतन प्रतिमाएँ भी पूजा-भक्ति करने वाले पुरुषों के विष तथा रोगादिक (जन्म-मरण के रोग) को नष्ट करती हैं। ऐसी महनीय प्रभावशाली जिनभक्ति कही गयी है। लोक मर्यादा है कि–

रिक्तपाणिर्न पश्येत् राजानं देवतां गुरुम्।
नैमित्तिकविशेषेण फलेन फलमादिशेत्॥

सेवा में मनुष्य का धर्म बोलता है।

अर्थात् राजा, गुरु और देव के समक्ष खाली हाथ कभी नहीं जाना चाहिये। निमित्त-नैमित्तिक तथा द्रव्य की विशेषता से फल में भी विशेषता आती है। हमारे यहाँ जिनदेव के समक्ष चढ़ाये जाने वाले द्रव्यों में भी संसार मुक्ति की कामना समाहित है। द्रव्य चढ़ाते समय व्यक्ति/पूजक यही यही भावना भाता है। जल चढ़ते समय जन्म-जरा-मृत्यु के नाश, चंदन चढ़ाते समय संसार के ताप के नाश, अक्षत (चावल) चढ़ाते समय अक्षय पद (मोक्ष) प्राप्ति, पुष्प चढ़ाते समय काम भावना के नाश, नैवेद्य चढ़ाते समय क्षुधा नाश, दीप चढ़ाते समय अज्ञान नाश, धूप चढ़ाते समय अष्ट कर्मों के नाश और फल चढ़ाते समय मोक्ष फल प्राप्ति की भावना रखते हुए साधक/दर्शन करने वाला/पूजक मोक्षपद प्राप्ति की कामना करता है। जो सही साधक है, पूजक है उसे संसार-स्वर्ग के सुख नहीं, बल्कि मोक्ष सुख की ही प्रबल और एकमात्र चाह रहती है। उसकी सब क्रियाएँ, भावनाएँ आत्मा से आत्मा के लिये होती हैं, शरीर को तो वह मात्र साधक मानता है।

देवदर्शन का फल देवदर्शन की प्रक्रिया से ही प्रारम्भ हो जाता है। आचार्य रविषेण ने पद्मपुराण में लिखा है कि ''जो मनुष्य जिनप्रतिमा के दर्शन का चिन्तवन करता है वह बेला का, जो उद्यम का अभिलाषी होता है वह तेला का, जो जाना प्रारम्भ करता है वह चौला का, जो जाने लगता है वह पाँच उपवास का, जो कुछ दूर पहुँच जाता है वह बारह उपवास का, जो बीच में पहुँच जाता है वह पन्द्रह उपवास का, जो मन्दिर के दर्शन करता है वह मासोपवास का, जो मन्दिर के आँगन में प्रवेश करता है वह छह मासोपवास का, जो द्वार में प्रवेश करता है वह वर्षोपवास का, जो प्रदक्षिणा देता है वह शत वर्षोपवास का, जो जिनेन्द्र देव के मुख का दर्शन करता है वह सहस्र वर्षोपवास का और जो स्वभाव से स्तुतिकरता है वह अनन्त उपवास का फल प्राप्त करता है। वास्तव में जिनेन्द्रभक्ति से बढ़कर उत्तम पुण्य नहीं है। जिनभक्ति से कर्मक्षय को प्राप्त हो जाते हैं और जिसके कर्म क्षीण हो जाते हैं वह अनुपम सुख से सम्पन्न परम-पद को प्राप्त होता है।''

जब हम जिनबिम्ब का दर्शन करते हैं तब हमें रागी और वीतरागी, शरीर और आत्मा का भेद ज्ञात होता है। कवि कहता है कि भक्त और भगवान में बस यही तो अन्तर है कि हम संसार में दुःखी हैं और वे शरीर छोड़कर परमात्म पद को प्राप्त हो चुके हैं–।

हे राजन् ! यद्यपि जिन-प्रतिमा अचेतन है तथापि उसे वेदन शून्य नहीं मानना चाहिए। संसार में निश्चित रूप से परिणाम ही पुण्य पाप का कारण होता है। जिस प्रकार वज्रभित्ति पर कन्दुक पटकने पर उसके सम्मुख यह फट जाती है, उसी प्राकर दुःख-सुख कारक निन्दा एवं स्तुतिपरक वचनों के प्रभाव से यद्यपि प्रतिमा भग्न नहीं होती तथापि उससे शुभाशुभ कर्म तुरन्त लग जाते हैं। धार्मिक कर्मों को स्वर्ग का कारण कहा गया है। यह जानकर शुद्ध भावनापूर्वक जिन भगवान का चिन्तन करो और उनकी प्रतिमा का अहर्निश ध्यान करो। 'दर्शन पाठ' के अनुसार–

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पापनाशनं।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥

अर्थात् जिनेन्द्र देव के दर्शन करने से पापों का नाश होता है। जिनेन्द्र देव का दर्शन स्वर्ग के लिए सीढ़ियों के समान है। जिनेन्द्र देव का दर्शन मोक्ष का साधन (उपाय) है।

हे जिनेन्द्र भगवान ! आज आपके चरण कमल के देखने से हमारे दोनों नेत्र सफल हो गये हैं। आज तीन लोक तिलक स्वरूप भगवान के दर्शन करने से हमारा संसार समुद्र अंजुली के समान रह गया है। यह दिन हमारे जीवन में बार-बार आये; ऐसी मंगल कामना क हूँ।

जलगालन

जल को संसार में जीवन कहा गया है, क्योंकि यह प्राणियों की अनिवार्य आवश्यकता है। चाहे वे मनुष्य हों या पशु-पक्षी। चूँकि जल में हर चीज घुल जाती है, अतः इसमें अशुद्धि की संभावना बनी रहती है। इस अशुद्धि में धूल, मिट्टी, लवण, खनिज एवं अनेक सूक्ष्म जीव मिले होते हैं। जलचर जीवों की बहुलता भी जल को निरन्तर अशुद्ध बनाये रखती है। वायुमंडल में ऑक्सीजन, कार्बन डाइ आक्साइड, नाइट्रोजन, नाइट्रोजन डाइ आक्साइड, सल्फर डाइ आक्साइड आदि गैसें पाई जाती हैं जो जल में घुलकर उसे दूषित कर देती हैं। विभिन्न औद्योगिक इकाइयों के दूषित पदार्थों के नदियों में छोड़े जाने से भी जल प्रदूषित हो जाता है।

''विकास के तमाम दावों के बावजूद विश्व की लगभग अरब आबादी को पीने का साफ पानी भी मयस्सर नहीं होता। एक अनुमान के अनुसार लगभग २ हजार लोग प्रतिदिन दुनिया में गंदे जल के सेवन की वजह से अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।''

जल प्रकृति का अक्षय और सर्वश्रेष्ठ वरदान है। विज्ञान की दृष्टि में जल को Universal Solvent माना गया है, क्योंकि इसमें अन्य पदार्थों को स्वयं में विलय करने की शक्ति होती है। जल में शीतलता का स्वाभाविक गुण पाया जाता है जिसको स्वच्छ बनाये रखना हम सबका परम कर्तव्य है।

पेयजल निरन्तर कम होता जा रहा है। एक ओर उद्योगों के विषैले रासायनिक पदार्थ हैं तो दूसरी ओर शहरों की सीवर लाइन्स सीधे नदियों से जोड़ दी गयी हैं। आज कच्चे तेल आयात-निर्यात का कार्य समुद्री मार्ग से ही बहुतायत में होता है। तेल के जहाजों से करोड़ों टन तेल समुद्री जल में रिस जाता है फलतः एक ओर समुद्री जीव-जन्तुओं

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है।

को मौत के मुँह में जाना पड़ता है तथा जल में तैलीय तत्व की अधिकता हो जाती है। इस तरह मानवीय जरूरतों की कीमत मानवों को ही नहीं बल्कि अन्य जीव-जन्तुओं को भी देनी पड़ती है।

धर्मात्मा पुरुषों को मद्य, मांस, मधु आदि की भाँति राग और जीव हिंसा से बचने के लिए रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए। जो दोष रात्रि भोजन में लगते हैं, वही दोष अगलित पेय पदार्थों में लगते है। यह जानकर बिना छने जल, दूध, घी, तेल आदि द्रव्यों के सेवन का त्याग करना चाहिए। इस प्रकार जलगालन का प्रयोजन बाह्य अशुद्धियों से छुटकारा, जल में विद्यमान जीवों की रक्षा तथा स्वयं को स्वस्थ बनाये रखना होता है।

जलगालन के उपाय :

जल की शुद्धि अर्थात जल को जीवरहित करने के निम्न उपाय हैं :

१. वस्त्र के जल छानकर जिवाणी यथास्थान विसर्जित करना।

२. प्लास्टिक की छन्नी, थैली आदि से जल छानना।

३. सौर ऊर्जा द्वारा जल को जीवरहित करना।

इनमें से प्रथम उपाय ही श्रेयस्कर एवं उपादेय है क्योंकि इसमें एक ओर जल शुद्ध होगा, साथ ही जीवों की रक्षा भी होगी।

दूसरे एवं तीसरे उपाय में जल भले ही छन जाये किन्तु जीव रक्षा संभव नहीं है बल्कि मृत जीवों का मिला रहना भी संभव है। अतः जल वस्त्र से ही छानें।

शास्त्रों में हाथी जैसे जानवर द्वारा गालित जल पीने के उदाहरण मिलते हैं तो फिर हम तो मनुष्य हैं ? क्यों ना हम भी जलगालन कर जल का सेवन करे ताकि हम भी स्वस्थ रहें और जीवों की भी रक्षा हो। आज जो डिब्बा या शीशी बंद पेय एवं भोज्य पदार्थ मिल रहे हैं वह जलगालन की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। अनेक बार इनमें जीव-जन्तु यहाँ तक कि केंचुए तथा साँप आदि भी देखे गये हैं। अतः इनका भूल कर भी सेवन नहीं करना चाहिए। यही आपका हितैषी डॉक्टर कहता है और यही हजारों वर्षों से जैनाचार्य कहते आ रहे हैं। बस हमें इस सिद्धान्त के पालन की आवश्यकता है।

रात्रि भोजन त्याग

भोजन प्राणी मात्र की आवश्यकता है जिसे वह स्वशक्ति एवं स्वविवेक के अनुसार निजपुरुषार्थ से प्राप्त करता है। जहाँ अन्य प्राणियों में विवेक की कमी है वहीं मनुष्य को प्राणी जगत में सबसे अधिक विवेकी माना गया है अतः उसके भोजन को सात्विक होना अपेक्षित है। ऐसा हमारे धर्म ग्रन्थ, धर्माचार्य, नीतिनिर्धारक और अनुभवी जन बताते हैं। आज चिकित्साशास्त्रियों का भी यह स्पष्ट मत है कि चूँकि मनुष्य शारीरिक संरचना विशेष रूप से उसका पेट, आँत, जबड़े, मुँह, दाँत, जीभ, तालु आदि पशुओं से भिन्न अतः उसके लिए ऐसा भोजन उपयुक्त है जो सात्विक भी हो और समयानुकूल भी इसीलिए जहाँ मनुष्य के लिए शाकाहार को श्रेष्ठ आहार बताया गया वहीं दिन में ही भोजन करने के लिए बताया। अतः स्पष्ट है कि रात्रि भोजन मनुष्य के लिए इष्ट नहीं है। आचार्य समन्तभद्र के अनुसार-

अन्नं पानं खाद्यं लेह्यं नाश्नाति यो विभावर्याम्।
स च रात्रिभुक्ति विरतः सत्वेष्वनुकम्पमानमनाः॥

(रत्नकरण्ड श्रावकाचार-१४२)

अर्थात् जो जीवों पर पर दयायुक्त चित्तवाला होता हुआ रात्रि में अन्न, जल, लड्डू आदि खाद्य और रबड़ी आदि लेह्य पदार्थों को नहीं खाता है वह रात्रि भुक्ति त्याग नामक प्रतिमाधारी है। अर्थात् जीवों पर दया कर रात्रि में अन्न, पान, खाद्य और लेह्य इन चारों प्रकार के आहार का त्याग करना रात्रिभोजनविरमण नामक छठा अणुव्रत है। 'कार्तिकेयानुप्रेक्षा' (३८३) के अनुसार–

जोणिसि भुत्तिं वज्जदि, सो उववासं करेदि छम्मासं।
संवच्छरस्य मज्झे आरंभं मुयदि रयणीये॥

अर्थात् जो पुरुष रात्रिभोजन को छोड़ता है वह एक वर्ष में छह महीने का उपवास करता है। रात्रिभोजन का त्याग करने के कारण वह भोजन व व्यापार आदि से सम्बन्धित सम्पूर्ण आरंभ भी रात्रि को नहीं करता। अर्थात् आरंभी हिंसा से बच जाता है।

रात्रि में भोजन करने वालों की थालियों में डाँस, मच्छर, पतंगे आदि छोटे-छोटे जीव आ पड़ते हैं। यदि दीपक न जलाया जाय तो स्थूल जीव भी दिखाई नहीं पड़ते और यदि दीपक जला लिया जाय तो उसके प्रकाश से थाली आदि में और अनेक जीव आ जाते हैं। भोजन पकते समय भी उस अन्न की वायु (गंध) चारों ओर फैलती है इसलिए उस वायु के कारण अनेक पात्रों में अनन्त जीव आ-आ कर पड़ते हैं। पापों से डरने वालों को ऊपर लिखित अनेक दोषों से भरे हुए रात्रि भोजन को विष मिले अन्न के समान सदा के लिए अवश्य त्याग कर देना चाहिए। चतुर पुरुषों को लड्डू, पेड़ा, बर्फी आदि खाने की चीजें वा नारियल का दूध, फल आदि कोई भी पदार्थ ग्रहण नहीं करना चाहिए। जो पुरुष रात्रि में स्वाद्य पदार्थों को खाते हैं-अन्न के पदार्थ नहीं खाते वे भी पापी है क्योंकि अन्न वा स्वाद्य पदार्थों में कोई भेद नहीं है। चतुर पुरुषों को रात्रि में सुपारी, जावित्री, तांबूल आदि भी नहीं खाने चाहिए क्योंकि इनमें अनेक कीड़ों की संभावना रहती है अतः इनका खाना भी महापापोत्पादक है। धीर वीरों को दया धर्म पालनार्थ प्यास लगने पर भी अनेक सूक्ष्म जीवों से भरे जल को भी रात्रि में कभी नहीं पीना चाहिए।

जीवन की सच्चाई भविष्य की परछाई होती है।

जो विद्वान रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्याग कर देते है उन्हें प्रत्येक मास में पन्द्रह दिन उपवास करने का फल प्राप्त होता है।

लाटी संहिता (४७-४९)के अनुसार– रात्रि भोजन का त्याग करना कुलक्रिया है और उसके बिना दर्शन प्रतिमा या मूलगुण हो ही नहीं सकते । दूसरी बात यह है कि यदि रात्रि भोजन त्याग रूप कुलक्रिया का पालन न किया जायेगा तो फिर सर्वज्ञ देव की आज्ञा का लोप करना समझा जायेगा। वास्तव में सर्वज्ञ देव के अनुसार जो क्रियावान् है- कुलक्रिया का पालन करता है। वही श्रावक माना जाता है, अतः रात्रि भोजन का त्याग अवश्य करना चाहिए।

रात्रि भोजन करने में और भी दोष हैं जो इस प्रकार हैं :-

१. रात्रि में दीपक या बिजली के प्रकाश के सहारे पतंगा एवं अन्य कीड़े आ जाते हैं, क्योंकि विद्युत के तीव्र प्रकाश के कारण अनेक जीव उसकी ओर आकर्षित होते हैं, और जो गमनागमन के कारण या दूसरे जीवों से टकराने के कारण जरा सी देर में मरण को प्राप्त कर भोजन में मिल जाते हैं। कभी-कभी तो जीवित जीव-जन्तु भी भोजन में मिल जाते हैं।

२. रात्रि में भोजन करने में योग्य और अयोग्य का विचार नहीं रहता, क्योंकि सूक्ष्म दृष्टि रखने पर भी कुछ जीव दिखाई नहीं देते।

३. रात्रि भोजन संयम का घातक है।

४. रात्रि में बनने वाला भोजन, भोजन बनते समय अनेक जीवों का विघातक होता है तथा दूसरे दिन खाने पर उसके रूप,रस,गंध एवं स्वाद में भी बदलाव आ जाता है। अतः रात्रि भोजन त्यागी को रात्रि में बना भोजन भी इष्ट नहीं है।

५. जैन लोग कुलक्रमागत रीति से रात्रि भोजी नहीं हैं।

६. रात्रि भोजन करने से बर्तनों में पड़ी जूठन को खाने के लोभ में अनेक जीव उनमें गिर कर मर जाते हैं जिसका पाप रूप दोष रात्रि में भोजन करने वालों को ही लगता है।

७. भोजन शयन के एक प्रहर पूर्व कर लेने से स्वास्थ्य के लिये लाभदायक होता है ऐसा चिकित्सको का मत है। ऐसा करने पर अजीर्ण नहीं होता । इस दृष्टि से भी रात्रि भोजन करना इष्ट नहीं है।

८. स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक प्रकाश की उपलब्धता के कारण सूर्यास्त से पूर्व भोजन करना परमहितकारी है,क्योंकि रात्रि के प्रथम और द्वितीय प्रहर में जितनी अच्छी तरह भोजन पचता है वैसा रात्रि के तीसरे और चौथे प्रहर में नहीं पचता ।

९. सायंकालीन भोजन के पश्चात् भ्रमण करने से भोजन शीघ्र पचता है और वायुजन्य विकार भी उत्पन्न नहीं होते हैं, कब्ज भी नहीं बनता है । यदि रात्रि में भोजन किया गया तो भ्रमण के लिये अवसर ही कहाँ मिलता है ? यदि समय से भोजन नहीं पचता है तो अनिद्रा, अपच, सिरदर्द, कफ, कब्ज, मूर्छा, आदि तकलीफें बढ़ जाती है ।

१०. रात्रि भोजन हैजा आदि संक्रमक रोगों का जनक माना गया है। क्योंकि इस भोजन को अन्य जीवों द्वारा जूठा किया जाता है ।

११. रात्रि में भोजन बनाने हेतु जलाई जाने वाली अग्नि में अनेक वायुमण्डल रात्रि के कारण उन्मुक्त विचरण कर रहें जीव-जन्तुओं का जल कर मरना तय हो जाता है । अतः ऐसा करना उचित नहीं है। हमारी परम्परा रही है कि हम लोग रसोई घर में चूल्हे के ऊपर मोटे कपड़े का चँदोवा बांधकर रखते है ताकि कोई जीव-जन्तु उसे में गिर कर जल न सके ।

१२. यदि हम किसी को जीवन दे नहीं सकते तो किसी का जीवन का हमारा क्या अधिकार है ? क्या कोई बता सकता है कि रात्रि भोजन में जीव हिंसा नहीं होती ? सामूहिक रात्रि भोजों में अनेक बार साँप,मकड़ी,छपकली, चूहा, चींटी आदि के मिल जाने से भोजन विषाक्त होने के कारण अनेक लोगों के बीमार हो जाने, उल्टी-दस्त होने और मर जाने तक के अनेक उदाहरण आये दिन हम पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ते रहते हैं।

पद्मपुराण में कथन है कि जिस समय लक्ष्मण जी जाने लगे तो उनकी नव विवाहिता वधू वनमाला ने कहा कि -''हे प्राणनाथ, मुझ अकेली को छोड़ कर जो आप जाने का विचार करते हो तो मुझ विरहिणी का क्या हाल होगा ?'' लक्ष्मण जी उत्तर देते हैं कि-

स्ववधूं लक्ष्मणः प्राह मुंच मां वनमालिके।
कार्ये त्वां लातुमेष्यामि देवादिशपथोऽस्तु मे ॥
पुनरूचे तयेतीशः कथमप्यप्रतीतया।
ब्रूहि चेन्नैमि लिप्येऽहं रात्रिभुक्तेरघैस्तदा ॥

अर्थात् हे वनमाले मुझे जाने दो, अभीष्ट कार्य के हो जाने पर मैं तुम्हें लेने के लिए अवश्य आऊँगा । मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अगर मैं अपने वचनों को पूरा न करूँ तो जो दोष हिंसादि के करने से लगता है उसी दोष का मैं भागी होऊँ।

सुनकर वनमाला लक्ष्मण जी से बोली-मुझे आपके आने में फिर भी संदेह है इसलिए आप यह प्रतिज्ञा करें कि-''यदि मैं न आऊँ तो रात्रि भोजन के पाप का भोगने वाला होऊँ।''

इस तरह पुराण ग्रन्थों में भी रात्रि भोजन त्याग की महत्ता बताई गई है। हमें भी अपने स्वास्थ्य, धर्म और कुलरीति की रक्षा के लिए रात्रि भोजन त्याग अवश्य करना चाहिए।

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है ।

जैनधर्म के नवम तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त भगवान्

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
मो. 09826565737

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की काकन्दी नगरी में इक्ष्वाकुवंशी काश्यपगोत्री सुग्रीव नाम का क्षत्रिय राजा राज्य करता था। सुन्दर कान्ति को धारण करने वाली जयरामा उसकी पटरानी थी। उस रानी ने देवों के द्वारा अतिशय श्रेष्ठ रत्नवृष्टि आदि सम्मान को पाकर फाल्गुन कृष्ण नवमी के दिन प्रभात काल के समय मूल नक्षत्र में, सोलह स्वप्न देखे। स्वप्न देखकर उसने अपने पति से उनका फल जाना और "तुम्हारे गर्भ से तीर्थंकर का जन्म होगा;" यह जानकर बहुत ही हर्षित हुई। गर्भ में आया यह जीव पूर्व में पुष्पकलावती नामक देश का राजा महापद्म था जिसने मुनियों के प्रभाव से संसार से उदासीन हो तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया था और समाधिमरण पूर्वक प्राणत स्वर्ग में इन्द्र पद पाया था।

मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा के दिन जैत्रयोग में महादेवी जयरामा ने 1008 लक्षणों से युक्त उत्तम पुत्र उत्पन्न किया। उसी समय सौधर्म इन्द्र ने देवों के साथ आकर तीर्थंकर शिशु का क्षीरसागर के जल से अभिषेक किया, आभूषण पहिनाये और कुन्द के फूल के समान कान्ति से सुशोभित शरीर की दीप्ति से विराजित उन भगवान् का 'पुष्पदन्त' नाम रखा। उनका अपरनाम श्री सुविधिनाथ भी जगत् में प्रसिद्ध है। श्री चन्द्रप्रभ भगवान् के बाद जब 90 करोड़ सागर का अन्तर बीत चुका था तब श्री पुष्पदन्त भगवान् हुए थे। उनकी आयु भी इसी अन्तर में शामिल थी। दो लाख पूर्व की उनकी आयु थी, सौ धनुष ऊँचा शरीर था और पचास लाख पूर्व तक उन्होंने कुमार अवस्था के सुख प्राप्त किये थे।

साम्राज्य पाकर उन पुष्पदन्त भगवान् ने इष्ट पदार्थों के संयोग से युक्त सुख का अनुभव किया। उस समय बड़े–बड़े पूज्य पुरुष उनकी स्तुति किया करते थे। सब स्त्रियों से, इन्द्रियों से और इस राज्य से जो भगवान् पुष्पदन्त (सुविधिनाथ) को सुख मिलता था और भगवान् पुष्पदन्त (सुविधिनाथ) से उन स्त्रियों को सुख मिलता था उन दोनों में विद्वान् लोग किसको बड़ा अथवा बहुत कहें? भगवान् पुण्यवान् रहे किन्तु मैं उन स्त्रियों को भी बहुत पुण्यात्मा समझता हूँ क्योंकि मोक्ष का सुख जिनके समीप है ऐसे भगवान् को भी वे प्रसन्न करतीं थीं– क्रीड़ा कराती थीं। इस तरह उन्होंने मर्यादा के साथ वैवाहिक सुख–भोग किया।

राज्य करते हुए जब उनके राज्यकाल के पचास हजार पूर्व और अट्ठाईस पूर्वांग बीत गये तब वे एक दिन दिशाओं का अवलोकन कर रहे थे। उसी समय उल्कापात देखकर उनके मन में इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ कि यह उल्का नहीं है किन्तु मेरे अनादि कालीन महामोह रूपी अन्धकार को नष्ट करने वाली दीपिका है। इस प्रकार उल्का के निमित्त से उन्हें निर्मल आत्मज्ञान उत्पन्न हो गया। उन्होंने सुमति नामक पुत्र के लिए राज्य का भार सौंप दिया, और वनगमन की तैयारी की। इन्द्रों ने दीक्षा कल्याणक महोत्सव मनाया। वे उसी समय सूर्यप्रभा नाम की पालकी पर सवार होकर पुष्पकवन में गये और मार्गशीर्ष के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के दिन सायंकाल के समय बेला का नियम लेकर एक हजार राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। दीक्षा लेते ही उन्हें मनः पर्यय ज्ञान उत्पन्न हो गया।

तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त जिन दीक्षा लेकर मुनि अवस्था में दूसरे दिन आहार के लिए शैलपुर नामक नगर में

धर्म धारण करने की चीज है, उदाहरण की नहीं।

प्रविष्ट हुए। वहाँ सुवर्ण के समान कान्तिवाले पुष्पमित्र राजा ने उन्हें नवधा भक्तिपूर्वक आहार कराया। देवों ने पंचाश्चर्य किये। इस प्रकार छद्मस्थ अवस्था में तपस्या करते हुए उनके चार वर्ष बीत गये। तदनन्तर कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन सायंकाल के समय मूल नक्षत्र में दो दिन का उपवास लेकर नागवृक्ष के नीचे स्थित हुए और उसी दीक्षा वन में चार घातिया कर्मों को नष्ट कर अनन्तचतुष्टय को प्राप्त हुए। चतुर्णिकाय देवों ने/इन्द्रों ने उनके अचिन्त्य वैभव की रचना की। कुबेर ने समवशरण की रचना की जहाँ भगवान् की समस्त पदार्थों का निरूपण करने वाली दिव्यध्वनि खिरी। भगवान् की दिव्य ध्वनि का श्रवण कर समवशरण में बैठे हुए महानुभावों ने आत्म कल्याण का मार्ग प्राप्त किया और अनेक जीवों ने मुनि बनकर केवलज्ञानी हो मोक्ष पद प्राप्त किया।

वे सात ऋद्धियों को धारण करने वाले विदर्भ आदि अट्ठासी गणधरों से सहित थे, पन्द्रह सौ श्रुतकेलियों के स्वामी थे; एक लाख पचपन हजार पाँच सौ शिक्षकों के रक्षक थे, आठ हजार चार सौ अवधिज्ञानियों से सेवित थे, सात हजार केवलज्ञानियों और तेरह हजार विक्रिया ऋद्धि के धारकों से वेष्टित थे, सात हजार पाँच सौ मनःपर्ययज्ञानियों और छह हजार छह सौ वादियों के द्वारा उनके मंगलमय चरणों की पूजा होती थी; इस प्रकार वे सब मिलाकर दो लाख मुनियों के स्वामी थे। घोषार्या को आदि लेकर तीन लाख अस्सी हजार आर्यिकाओं से सहित थे, दो लाख श्रावकों से युक्त थे, पाँच लाख श्राविकाओं से पूजित थे, असंख्यात देवों और संख्यात तिर्यंचों से सम्पन्न थे। इस तरह बारह सभाओं से पूजित भगवान् पुष्पदन्त आर्य देशों में विहार कर सम्मेदशिखर पर पहुँचे और योग निरोध कर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन मूल नक्षत्र में सायंकाल के समय एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष को प्राप्त हो गये। तीर्थंकर भगवान् पुष्पदन्त के मोक्षगमन को जानकर अग्निकुमार देव आये और उनका निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाकर स्वर्ग चले गये। सौधर्म इन्द्र ने निर्वाण स्थल की पहचान सुनिश्चित करने के लिए चिन्ह अंकित कर दिया। आज भी श्री सम्मेदशिखर जी में हम सब उसी स्थल की वंदना करने जाते हैं और इस रूप में स्तवन करते हैं कि–

सुप्रभ कूट महा सुखदाई, जहँ तैं पुष्पदन्त शिव जाई।
सो विद्युतवर कूट महान, मोक्ष गये शीतल धर ध्यान।।

आचार्य श्री गुणभद्र ने उनकी स्तुति करते हुए लिखा है कि–

शान्तं वपुः श्रवणहारि वचश्चरित्रं, सर्वोपकारि तव देव ततो भवन्तम्।
संसारमारवमहास्थलरुद्रसान्द्रछायामहीरुहमिमे सुविधिं श्रयामः।।

अर्थात् हे तीर्थंकर पुष्पदन्त देव! आपका शरीर शान्त है, वचन कानों को हरने वाले हैं, चरित्र सबका उपकार करनेवाला है और आप स्वयं संसाररूपी विशाल रेगिस्तान के बीच में 'सघन' छायादार वृक्ष के समान हैं अतः हम सब आपका ही आश्रय लेते हैं और आत्महित करते हैं।

तीर्थंकर भगवान् श्री पुष्पदन्त स्वामी ने बताया कि संसार के सभी पदार्थ अपनी ही स्थिति वाले हैं। हम इष्ट–अनिष्ट की कल्पना के साथ उन्हें अच्छा या बुरा कहते हैं। जीवादि तत्त्व एकान्त दर्शन का निषेध करने वाले हैं, प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध हैं तथा विधि–निषेध रूप हैं। जो तत्त्व है "यह वही है"; ऐसी प्रतीति होने के कारण तत्त्व नित्य कहलाता है। वही तत्त्व अन्य रूप प्रतीति होने के कारण अनित्य कहलाता है। वस्तु तो वस्तु ही है किन्तु उसका नित्यानित्यत्व स्वीकार किया जाता है। एकान्तवादियों को ऐसा जानकर अपना संशय मिटाना चाहिए। आचार्य श्री गुणभद्र ने लिखा है कि–

विधाय विपुले मार्गे विनेयांश्चामले स्वयम्।
स्वयं च सुविधिर्योऽभूद् विधेयान्नः स तं विधिम्।।

अर्थात् जिन्होंने विशाल तथा निर्मल मोक्षमार्ग में अनेक शिष्यों को लगाया और स्वयं लगे तथा जो सुविधि रूप हैं अर्थात् उत्तम मोक्षमार्ग की विधि रूप है अथवा उत्तम पुण्य से युक्त हैं। वे सुविधिनाथ (पुष्पदन्त) भगवान् हम सबके लिए सुविधि अर्थात् मोक्षमार्ग की विधि प्रदान करें।

तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त का है जिनधर्म महान्।
आओ उनका वन्दन कर लें और बनें भगवान्।।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

मुस्कुराता - कुण्डलपुर

- संजय जैन 'मैक्स', इंदौर

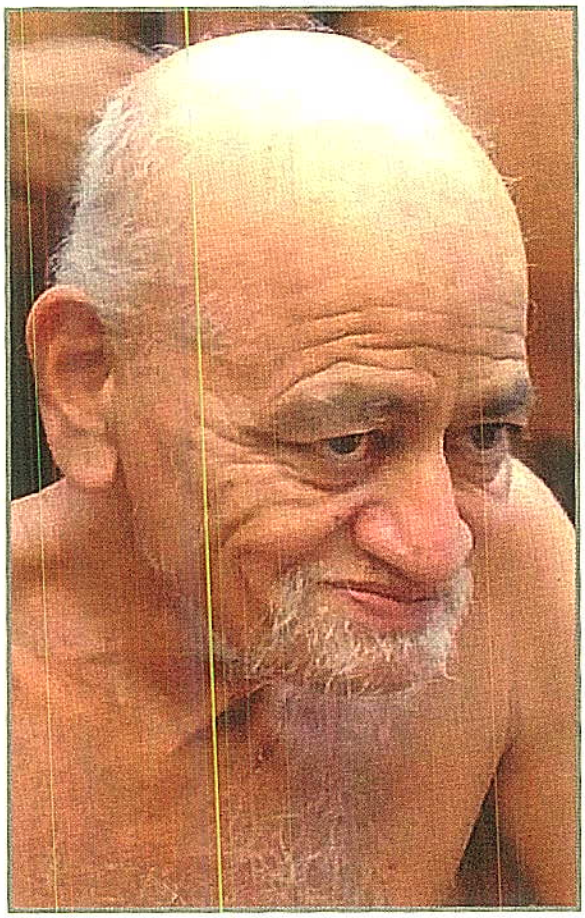

परमपूज्य राष्ट्रसंत आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज संघ चातुर्मास स्थल- श्री दिगम्बर जैन शीतल विहार न्यास, शीतलधाम, हरिपुरा विदिशा (म.प्र.) दिन- रविवार।

मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान सपत्नी, वित्तमंत्री श्री जयंत मलैया सपत्नी, हटा की विधायिका श्रीमती उमा खटीक सहित चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन किया गया। प्रथम वक्ता श्री हृदयमोहन जी जैन वरिष्ठ नेता विदिश नगर- मेरे परमात्मा लाखों श्रद्धालुओं के आस्था केन्द्र आ. विद्यासागरजी के चरणों में नमन नमोस्तु, 17 जनवरी, 2006 का दिन मुझे आज याद आ रहा है जब कुण्डलपुर के 'बड़े बाबा' पुराने स्थान से नये स्थान की उच्च वेदी पर स्थित, आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ स्वयं खड़े होकर आह्वान कर बड़े बाबा आकाश मार्ग से स्थापित हो गये, आचार्यश्री अपने नेत्रों से 1992 में स्वप्न देखा, कुण्डलपुर के बड़े बाबा वर्षों से जीर्णशीर्ण मंदिर में विराजमान थे और उच्चासन पर विराजमान हो गए। 2006 तक 14 वर्ष तक कठिन संघर्ष रहा कुण्डलपुर कमेटी और दमोह के लोगों ने किया। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने अपनी कुर्सी दांव पर लगा कर किया अभी भी सहयोग दे रहे हैं। हिन्दुस्तान की जैन समाज आपको हमेशा याद रखेगी। आचार्यश्री जी कृपा पात्र हैं आप तीसरी बार मुख्यमंत्री बनें। यह शीतल धाम आ.श्री जी के आशीर्वाद से बन रहा है।

आज के कार्यक्रम का नाम 'मुस्कुराता' कुण्डलपुर

(द्वितीय-वक्ता- श्री वीरेश सेठ 'कुण्डलपुर' दमोह) - मध्य प्रदेश सरकार के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, वित्तमंत्री श्री जयंत मलैया जी का साहृदय आभार प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष सहयोगी। बंधुओं 9 मई, 2104 एक ऐसा ऐतिहासिक फैसला भारत के सुप्रीम कोर्ट का आया, भारत देश की जैन समाज हर्षित हो गयी, 17 जनवरी, 2006 को श्री कुण्डलपुर के 'बड़े बाबा' का उच्चासन हेतु पडगाहन देखा। पूज्य गुरुदेव की दोनों आँखों से धारा फूट पड़ी थी। जैन धर्म में कर्मों का स्थान है।

इस न्याय की जड़ 17 जून, 2006 को प्रारम्भ हुआ। 9 मई, 2014 सुप्रीम कोर्ट के फैसले से पूर्ण हुआ। बहुत स्पष्ट रूप से कहा गया, श्री बड़े बाबा जी को पुराने मंदिर से निकाल कर नवीन स्थान विराजमान करना कानून था क्योंकि मूर्ति को ना निकालते तो संसार कभी माफ नहीं कर सकता। यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि आचार्यश्री के महातप का महत्व था।

कमेटी द्वारा - श्री मुख्यमंत्री जी को स्मृति चिह्न सप्रेम समर्पित साथ ही प्रशस्ति पत्र समर्पित किया गया।

करीब 8.5 वर्ष की अवधि का इंतजार करते रहे हैं यह व्यक्ति ऐसे थे जो नयी-नयी सरकार के मंत्री बने थे उन्होंने हम लोगों को आश्वासन दिया बगैर कानून तोड़े किसी प्रकार उल्लंघन किये बगैर भगवान नये मंदिर में विराजमान होंगे।

हम सभी ने देखा मुनि संघ उस समय कितनी तपस्या कर रहा था। सभी स्वयं सेवकों ने कहा हम किसी भी प्रकार की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करेंगे। मंत्री श्री मलैया जी ने स्वयं यह गवाही दी थी कानून का उल्लंघन न हो, 17 जनवरी, 2006 मुख्यमंत्री जी ने क्या कार्य किये वह हमें आज भी याद है हमें आश्वासन दिया। आचार्य महाराज विराजमान हैं वहाँ कानून का भारत सरकार ने कहा वह जैन आगम सम्मत हुआ, वह आचार्यश्री के निर्देशन में किया गया था। 17 जनवरी 2006 के पश्चात म.प्र. हाईकोर्ट ने स्टे ऑर्डर कर दिया जब तक अनुमति प्रदान नहीं की जाये तब तक स्थगित रखा जाये। इसके लिये हमारे अधिकारियों ने उच्च स्तरीय कमेटी बनायी। हमारे जिला महोदय का कहना था कि ऐसी कमेटी बनायी जो बहुत धैर्य के साथ कार्य किया।

भगवान खुले में रहने के कारण गुरुदेव दुखी थे। इतने अतिशयकारी बड़े बाबा को शीत, ग्रीष्म, वर्षा तीनों ऋतु सहना पड़ रहा है। जो मंदिर निर्माण हो रहा है हाईकोर्ट का फैसला कुण्डलपुर ट्रस्ट को अनुमति दी गई मंदिर के ऊपर डोम बनाया जाये, कुण्डलपुर ट्रस्ट ही डोम का निर्माण करे- मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने फैसला दिया।

उस फैसले में प्रमुख म.प्र. राज्य शासन के अधीनस्थ गमन हो हमारे मुख्यमंत्री का बड़ा योगदान रहा हमारे सहयोगी कार्यकर्ता श्री अशोक जी चावल वाले हैं। उन्होंने 1.5 करोड़ की सम्पत्ति बतौर सिक्युरिटी में जमा की थी। श्रीमती सुधा मलैया जी एवं श्री हृदय मोहन जी का भी अभूतपूर्व सहयोग था।

श्री मुख्यमंत्री जी - आज हम सब सौभाग्यशाली 'छोटे बाबा' के चरणों में बैठे, हम सब सौभाग्यशाली इस देह से इन नेत्रों के द्वारा गुरुवर के दर्शन करते हैं आचार्यश्री जी के सामने माला नहीं पहना, दर्शन जिनके अनमोल उस माला का क्या मोल अभिनंदन क्या? क्या करूँ आचार्यश्री ने कहा पहन लें -

जहां धर्म रहता है वहां धन अपने आप बरसता है।

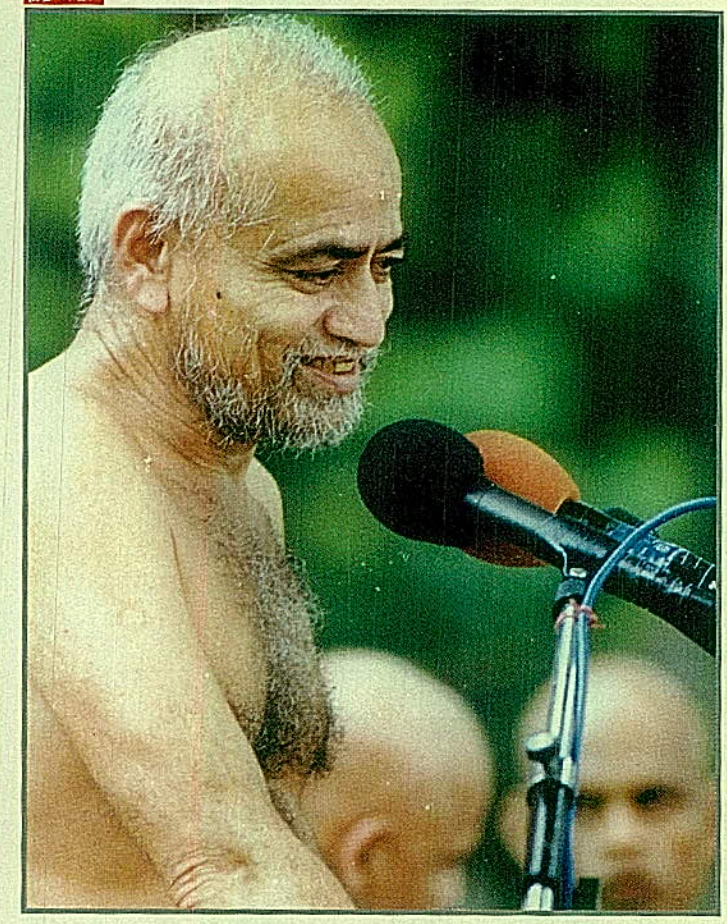

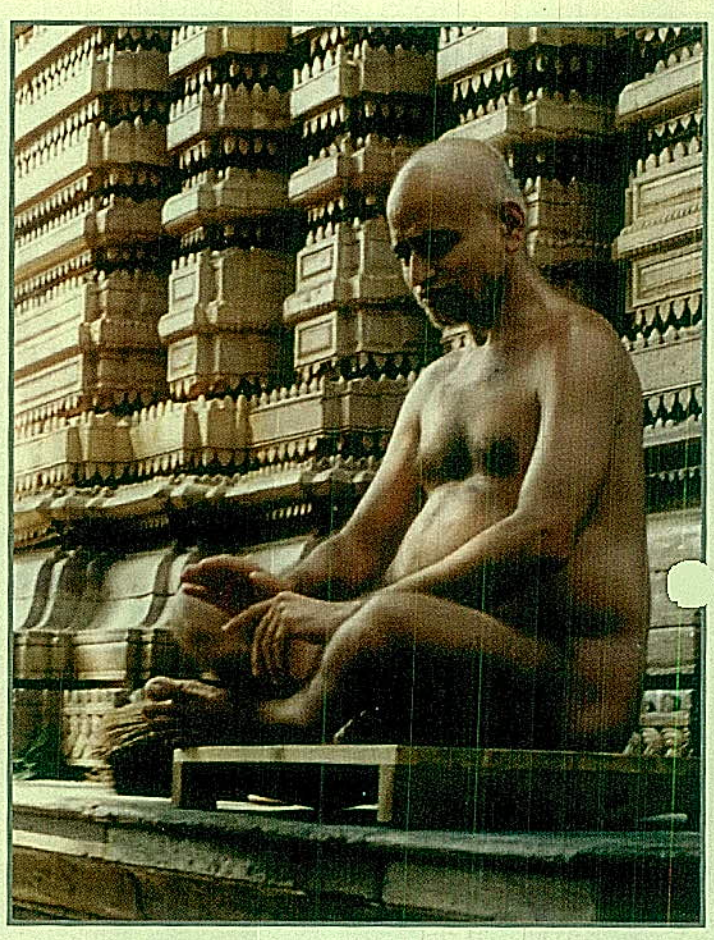

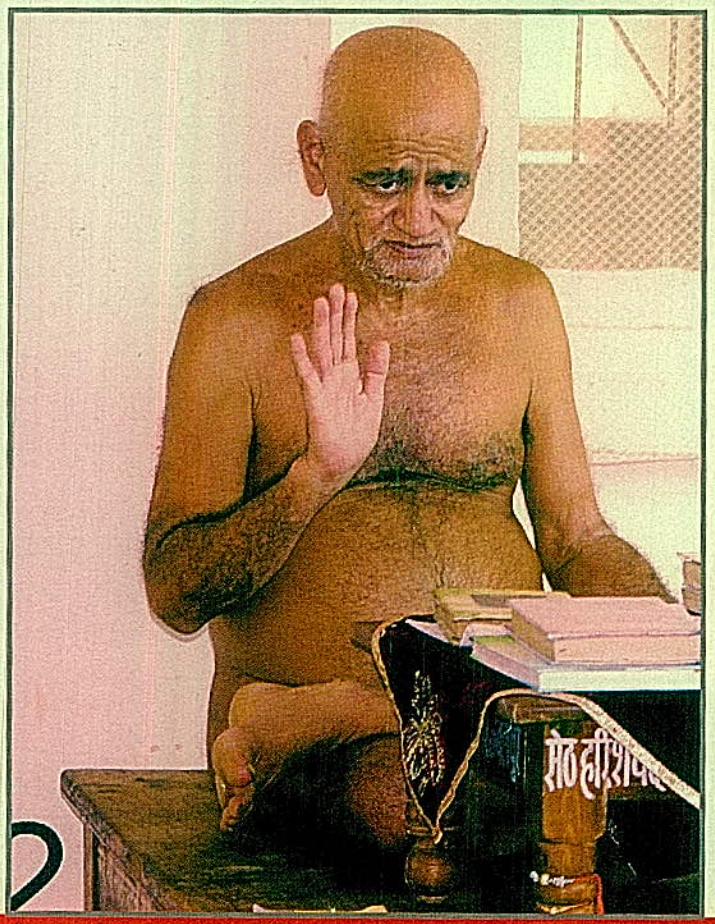

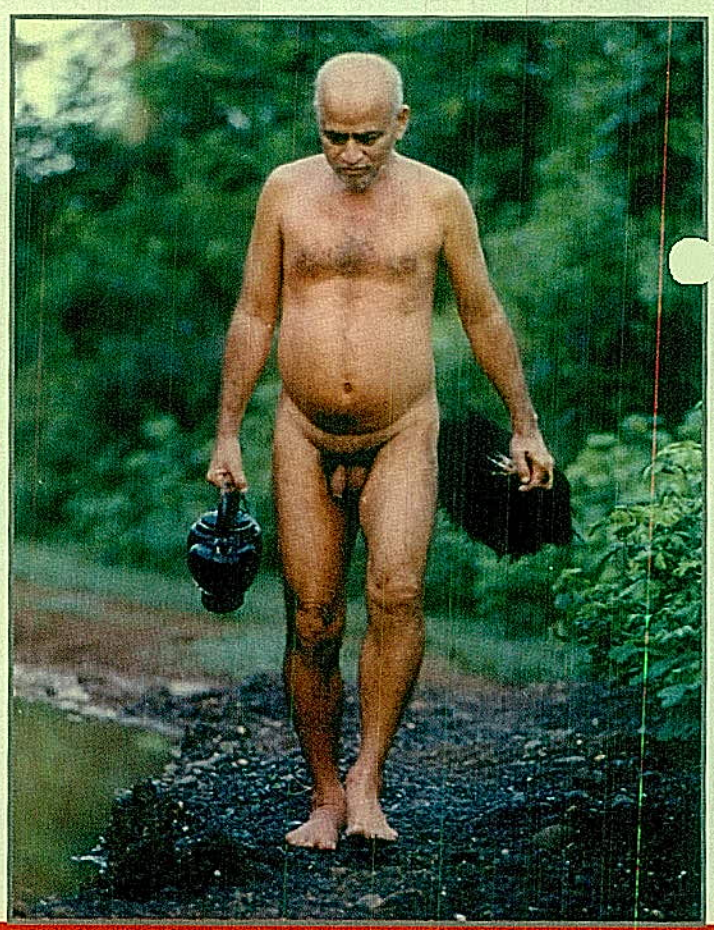

बिना पूछे न बोलें और पूछने पर असत्य न बोलें।

पहन लें यह समझ पगड़ी भी पहन ली। बड़े बाबा की आन, बान, शान नहीं जाने दूँगा। कई आये, कई चले गये, कौन पूछता है। सौभाग्यशाली हूँ 24 नवम्बर, 2005 शपथ ग्रहण समारोह। जो हो रहा था वह वैधानिक नहीं आपने विधि द्वारा स्थान की शपथ ग्रहण की शासन के अधिकारी मुझसे बोले - 'बड़े बाबा' आये तो यह उनकी विधि है हमारी सरकार चली जाये, कल जाने वाली हो क्यों न आज ही चली जाये।

आज आनंदित हैं 'छोटे बाबा' यहाँ विराजे कई बार मन करता मैं आपके साथ चलूँ। कई बार चुनौतियां आयी काम अच्छे होना चाहिए, मेरे मुख्यमंत्री होने से इसकी तकलीफ पत्नी को सहन करनी पड़ती।

हम सिर्फ आशीर्वाद में सद्बुद्धि देना, सन्मार्ग पर चल कदम-कदम पर फिसलना कहीं किसी दूसरे के साथ भी ना फिसलूँ। इतना सामर्थ्य देना आपके चरणों की रज से प्रदेश का विकास कल्याण कर सकूँ।

जमाना कहता है विकासशील म.प्र.राज्य, आपकी कृपा है प्रत्यक्ष भेंट ना हो आपका मार्ग सूक्ष्म तरंगला देता इसके मूल में करुणा, दया, अहिंसा यही भाव। यहां से जियो और जीने दो का सिद्धांत लेकर जाता। जो अपने आपको जीत लिया वह जैन, जैन तभी होंगे जब हम इंद्रियों को काबू में रखेंगे। अहिंसा अस्तेय हमारे मार्गदर्शन है उस रास्ते पर चलने वाले हमारे आचार्य श्रीजी।

गौ अभ्यरंड, मूकमारी व्यक्त नहीं कर सकते, हिन्दी विश्वविद्यालय अटल जी के नाम से खोला आपके चरणों की कृपा से भव पैदा हुए हिन्दी के भाव जागृत हुये, अंग्रेजी भाषा प्रतिभा को कुंठित कर देती है। अंग्रेजी में रिलेक्ट नहीं हो पा रहा। पढ़ाओ कैसे शब्दकोष। हिन्दी विश्वविद्यालय पढ़ाई, मेडिकल पढ़ाई हिन्दी में होगी जैसे विदेशों में चीन, जापान, जर्मन इत्यादि देशों में भाषा अनेक अनुरूप उसी प्रकार भारत में हिन्दी का बोलबाला पता नहीं कैसी मानसिकता। पार्लियामेन्ट में भी अंग्रेजी में भाषण करते हैं। अंग्रेजी में चुनाव जीत कर के देखें पता चल जायेगा, 100 करोड़ भारतीय हिन्दी बोलते और कहते हैं हम अपनी भाषा पर गर्व है। आपकी प्रेरणा से पाया। आचार्यश्री जी के वचन के समान हमें प्राप्त करना चाहिए।

आ.श्री जी विद्यासागर गौ संवर्धन योजना में आपके आशीर्वाद से एक लाख गायों को गौ संवर्धन, सौर ऊर्जा से बिजली सब बायोगैस से बिजली बना रहा आपका ज्ञापन सौंपा उस पर अमल करना चाहिए। आपके आशीर्वाद की वर्षा होती रहे, म.प्र. की धरती पर नई शराब दुकान नहीं खोलने दी जायेगी। मुँह के कैन्सर से बचाने के लिए जर्दा पर टैक्स लगाकर महंगा कर दिया। खुली शराब पर रोक लगा दी।

आचार्यश्री जी- समय का संयम की पगड़ी के साथ उपयोग करें। अभी बोल रहे थे जब पहले नेमावर में आये तब इस रूप में नहीं थे आज यहाँ आये तो अलग, यही तो विकास का स्वरूप है। चाल होती है कभी मंदी कभी तेज, यह आवश्यक होता इस ओर निगाह होती गति को ज्यादा देती, यह आवश्यक है कभी-कभी पीछे भी होना रुकना भी पड़ता, हम चलते रहते इनके उद्देश्य का चिंतन गमछा ये क्रम छै वाले सांसद हैं (गमछा, दुपट्टा) गमछा दया का चिह्न है पहले जो कोई भी प्रवास करते छानने को डेरा लोटा ले करके चलते थे, ये आपके पास आयेंगे याचना-प्रार्थना करेंगे म.प्र. गौरवशाली प्रदेश प्रशंसा करने लगे, यह वस्तु स्थिति है यह लंबा, चौड़ा बीच में म.प्र. है। यहाँ महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश बीच में म.प्र. है। सबका संतुलन भी लेकर चलना पड़ता है। हम शिक्षा प्रणाली की अपेक्षा साहित्य की दृष्टि गरीबी-अमीरी आप लोग वैसे ही देखते, किन्तु चरित्र में गरीबी सहनयोग्य नहीं, गांधीजी कहते थे सादा जीवन उच्च विचार खाने-पीने में सात्विकता, शक्ति भी हो प्रतिकूलिता विपरीतता जाये अमीर को औषधालय में भरती करना हो, वह आ नहीं सकता जिसका मन-वचन-तन स्वस्थ रहते।

वीणा के तार होते हैं उसके स्वर अभ्यस्त गीत आते संगीत चलते और भाव विभोर करते कसने पर तार सुरीले और ज्यादा कसने पर टूट जाते। मंगल में दंगल नहीं होना चाहिए, ढीला नहीं रखता कुछ भी आवाज नहीं निकली, थोड़े ज्यादा कसते टूट जाते, तो मध्यस्थ रहा इसी का नाम तो मध्यप्रदेश है। यहां पर सोच समझकर राज्य शासन करना फिसलना होता तभी नीचे देखकर चलोगे गिरो तो उनको लेकर गिरो, जो फिसलन करता क्यों करें थोड़े दिन का फिसलना। कितना भी क्यों ना हो अच्छे संभल कर चलने वाला पाषाण के ऊपर काई जम जाये अच्छे-अच्छे गिर जाते और अधिक होशियारी के साथ चलो दूसरों के साथ गिरो तो वैयावृत्ति कहाँ होगी।

निंदक नियरे राखीये, आंगन कुटी (सजाये) सजाये।

सबकी सुनो! मन की करो! निर्णय लेने के लिए सोच-समझकर करना। सौ धर्म इन्द्र है तो कुबेर की आवश्यकता होती है। आप धन को हाथ लगाओ नहीं, बड़े भैया कह कर सब कार्य करना चाहिए। एक हाथ से ताली नहीं बजती, अच्छे ढंग से तबला बाँसुरी बजाओ संगीत हो जाये तालियाँ बज जाती है। गंभीर अर्थ नहीं निकला हमारे लिए रोकने को है कि प्रोत्साहन को ही कवि को सुनता रहता। इस प्रकार की ताली नहीं बजाना चाहिए। हम प्रसन्नता की ओर नहीं देखेंगे, कोई भी राजकीय सेवा की ओर कार्यकर्ता हार/जीत की ओर नहीं देखता। पक्ष और विपक्ष दोनों मिलकर राष्ट्र चलाना हमेशा राष्ट्रीय पक्ष होना चाहिए। कोई भी दल कोई भी पक्ष हो सकता है आज धीरे-धीरे कमी होने के कारण भारतीयता गौण होती जा रही है। हमें पौवार्णिक चित्र देखने का योग खानदान में दीवार छेद रही, क्या होगा भारत को लौटाना जहां से स्वतंत्रता के बाद चले थे, कमी है उसके बारे में नहीं सोचते, नेता की दृष्टि चारों ओर होनी चाहिए, ऐसा नहीं भारत कहीं दीवार खड़े करे क्या पाकिस्तान है। देश विदेश प्रांत में नहीं रहा। एक समय सीमा तक रहना चाहिए, भारत कोई वस्तु नहीं, पाकिस्तान कोई वस्तु नहीं। आपको भारत का भी सोचना जो यातायात विचारों लेन-देन यहाँ का वहाँ विदेश में छोड़ना उदारता हमें सोचना चाहिए।

एक बार हम ललितपुर की ओर जा रहे थे गर्मी का समय था, महावीर जयंती नजदीक थी रास्ते में बैठना हुआ, वहाँ वाघ था एक दृश्य देखा कम से

बोलना स्वर्ण है किन्तु मौन स्वर्ण से निर्मित आभूषण है ।

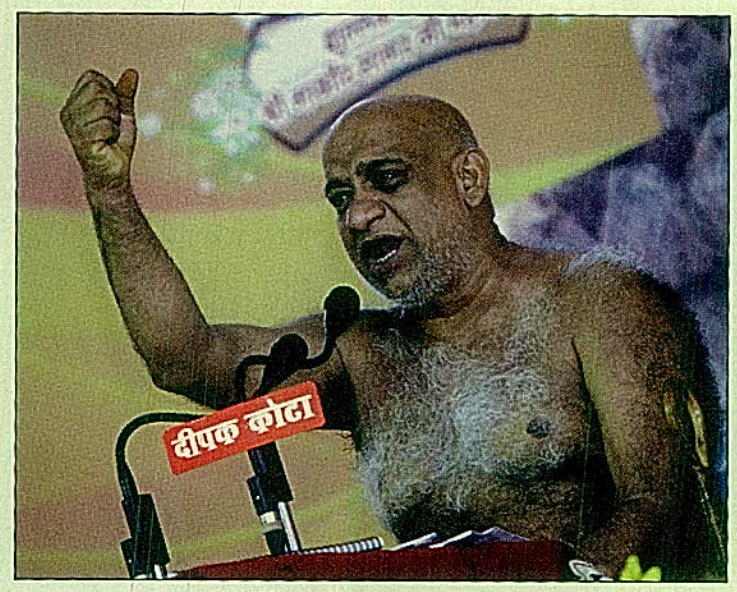

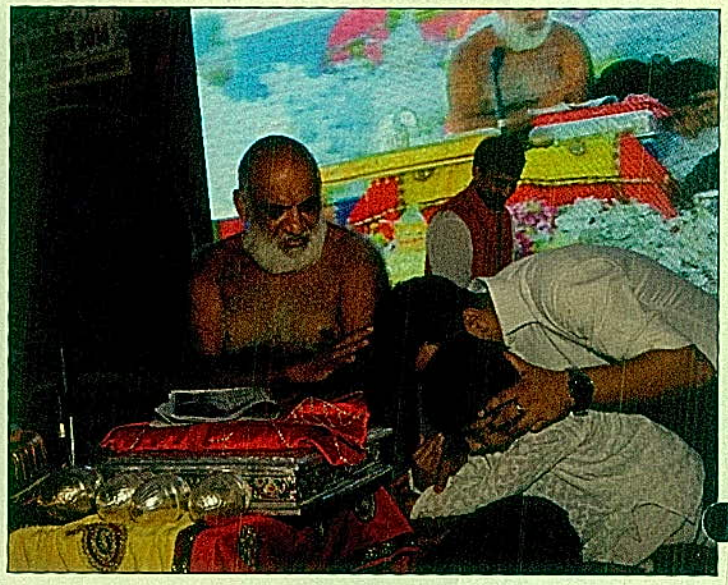

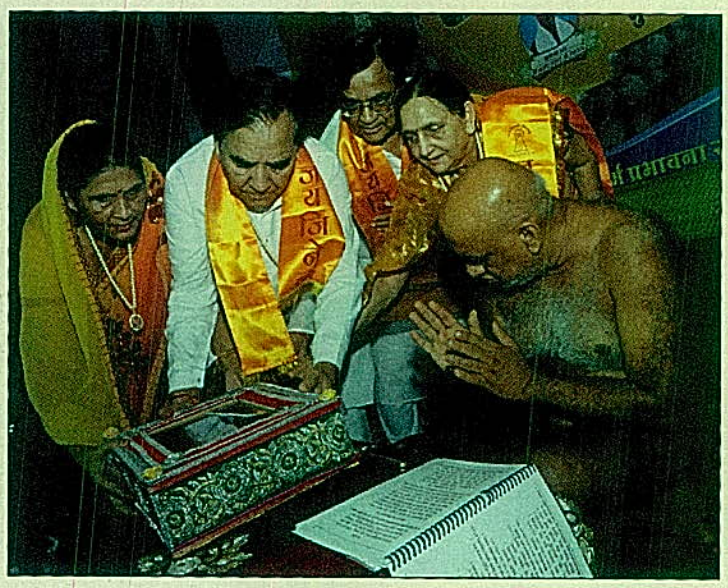

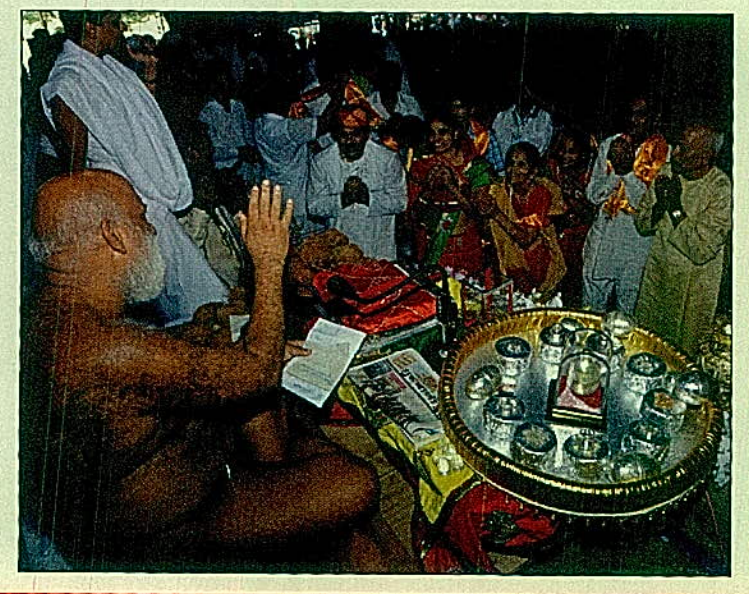

क्रिया सहित धर्म कभी निष्फल नहीं होता।

कम सैकड़ों बड़े-बड़े पेड़ खंडहर के रूप में खड़े ऊपर का सार विलय हो गया। तने बड़े-बड़े सारे सूखे हुए थे 'ओहो' जल की आवश्यकता आ जाने के अनुसार सहन नहीं हो पायी सब सूखे हुए। भारत की दशा अति के कारण सूखने जैसी हो गयी, जहाँ उसका उपयोग नहीं हो रहा, जहाँ उसका उपयोग नहीं हो रहा, ऐसी भी वनस्पति होती जो सूर्य प्रकाश के ताप का सहन कर लेते जल को पूर्ण सहन नहीं करते जैसे जल से भिन्न कमल का पौधा।

सम्यक दृष्टि समीचीन, दृष्टि रखता जल में रहकर सूखता नहीं और इसको पंकज, सरोज बोलते, कमल के पास संयम है दृष्टि आचरण है वह इस तरह सूखता नहीं वह घास से भी कोमल रहता। सूर्य प्रकाश से भी सूखता नहीं, जल में रहकर सड़ता नहीं, तीनों मौसमों को अपने आपको संभालते हुए खिला रहता है। सूर्य का ज्येष्ठ मास में 50 टेम्प्रेचर रहता, एक बूँद से ज्यादा सेवन नहीं [illegible]ा उसके पत्र पर मोती का रूप धारण है।

'मुक्ति फल नूनी बिन्दु'

उस जल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता जल में रहकर अपने कीचड़ का संबंध भी नहीं रखता।

वह बाद में अच्छे-अच्छे स्वादिष्ट भोजन करता अगला बीज बन ऐसा ही होगा। दुनिया में कृत्यह बनिया लोग सुनो यह प्रसंग नहीं। किसान ही ऐसा व्यक्ति है फल निकला नहीं दूसरे फल की तैयारी प्रारम्भ करता जो पहले किसकी है उसको दे देता। कोई किसान समय पर सोता नहीं, आप लोग कहते सर्दी, गर्मी, मेघ आये नहीं और काम कर लेता वो कभी गप्पे नहीं हाँकता। वह सोचता मैं भजन करने लग जाऊँ तो आपका क्या होगा, नेताजी क्या कहेंगे। भारत ने कुछ काल भुलाया इसलिए परिणाम निकला।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के समय गेहूँ की आवश्यकता पड़ी। अमेरिका का गेहूँ कैसा है यहाँ का गेहूँ मोती माणिक सभी [illegible] दो-दो बार भोजन करते हो एक वक्त का त्याग करो इसको कहते हैं तपस्या।

फिर भी आप लोग तीन बार करते कहते दवा खाना चाहिए। यह भी अहिंसा धर्म है हम अपव्यय ना करें, आलस्य ना करें।

हम नेमावर से विहार कर आये खेतों की ओर देखते हुए आये, कितना प्रयास कर रहे किसान ना सोना-चाँदी पहन लो और क्या बारह बज गया। चक्कर तो नहीं आ रहा क्योंकि 'भूखे भजन ना हो गोपाला ले लो कंठी माला' एक रोटी चाहिए मिनटों नहीं सेकंडों के प्राण हैं, हमें बीज को सुरक्षित नहीं रखना जहाँ रखना बीज रहता है 2 साल 3 साल बताओ कितने गोदाम रखो अनाज में इल्ली लगता क्या इल्ली खा जायेगी। बताओ दुकानदार इसके ऊपर देव लोग किसी के बारे में बुरा नहीं बोला जाता अभी स्वर्ग नहीं जाना स्वर्ग है नहीं यहाँ तो हाथों से करना। सब तैयार जैसे थाली आपके सामने मेघ की और निगाह की तीन-चार अभियान हो गया कोई भी धान्य काम नहीं रहेगा। भारत बीज से खाली हो रहा है। आज ऐसे गेहूँ आ रहा उसमें से निकालकर बीज बो ले, यह इस प्रकार अंधकार है इसलिए भारतीय बीजत्व, पशुपालन, शिक्षा की अपेक्षा अज तक सब में संक्रमण हो गया एक बोरी बोला तो देश आता, रख दोगे तो भी समाप्त, आप गोदाम ना बनाये वितरण करे, उस गोदाम की अपेक्षा गौधाम बनाये। आपके हिसाब से पहले तो वे गौ पालते थे।

जैन पुराण ग्रंथों में लिखा है यह सूत्र भी बना है आप गौ पालते नहीं वह आपको पालती वही आपकी आजीविका का साधन है। गौ के ना पालने से महान हानि का कार्य, राष्ट्र की हानि होगी इसके द्वारा क्या नहीं रहता दया का भाव। आप लोगों के माध्यम से मोह के कारण दया से पाल सकते। दया क्या है ? अनुकम्पा, अहिंसा पालन क्या होता, उपादान, आत्मिकता जुड़ जाती आज शासन को भी ज्ञान हो रहा है।

आज पूछना चाहता हूँ? कमल सारे सरोवर को सहन कर खिल रहा, अपने जन्म स्थान से संबंध तोड़ता नहीं, जीने की बात कही थी कैसे संरक्षण है जो तालाब के पानी का स्तर नीचे गया, बहुत भारी वर्षा हो गयी एक दिन में 8-10 फीट पानी भर गया। सुबह पुनः उजाला हुआ कमल खिल गया क्या आश्चर्य वस्तु स्थल खिल गया, कमल डूब गया, उसकी नाल 10 फीट बढ़ कर ऊपर ले आयी, सूर्यनारायण के दर्शन से खिल गया वह पानी के स्तर पर रहता अपने स्थान को नहीं छोड़ता, जिसके ऊपर खड़ा नहीं।

अनुवाद वो होता है नाम का अनुवाद होता, भारत का अनुवाद हो गया उसका नाम इंडिया पड़ गया, किसने कहा भारत का नाम इंडिया करो? देश का परिवर्तन इसलिए कहना इंडिया को हटाओ, भारत को पुनः जीवित करो। हमें इंडिया नहीं चाहिए भारत को जीवित करना अपना शिवराज नाम परिवर्तन कर इसका इंग्लिश करें तो कैसा?

आचार्यश्री ने कहा - जब इंडिया बना भारत की कुंडली में परिवर्तन आ गया। इंडिया शब्द की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में इंडियन अपराधी तथा पुराने ढर्रे वाला व्यक्ति कहा जाता है। कश्मीर से कन्या कुमारी तक भारत एक है तथा आदि से अनादि तक जीवंत रहेगा। हम भारतवासी हैं। भारत के नामकरण के साथ जो इंडिया शब्द अंग्रेजी शब्द अंग्रेजों ने जोड़ दिया है, उसे अब भारतीय डिक्शनरी से हटाना ही होगा। ऐसी प्रतिज्ञा अब आप लोग कर लो।

उन्होंने कहा कि एक ओर तो हम पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पौधे लगाने की बात कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर जंगल पर जंगल मिटा दिए। अंडे की खेती, मुर्गी पालन एवं मछलियों की खेती के नाम पर जीव हिंसा को बढ़ावा दिया जा रहा है। फिर कैसे अहिंसा धर्म का पालन होगा। मात्र साहित्य ही संस्कृति नहीं, जीवदया भी महत्वपूर्ण है। जीवदया के क्षेत्र में भी आप लोगों को विचार करना होगा। अहिंसा पालन में कोई छूट नहीं होती। यदि अपने जीव दया के बारे में नहीं सोचा तो आप कैसे अपनी संस्कृति की रक्षा करोगे। दया, अनुकंपा, करुणा आदि शब्द मात्र नहीं इनको महसूस करना आवश्यक है।

आचार्यश्री जी ने कहा कि दया के क्षेत्र में आपको कदम रखना है एवं

जिन धर्म गुणों की उपासना करता है व्यक्ति की नहीं ।

प्रत्येक जीव के संरक्षण के लिए ध्यान देना है। आवश्यकता के अनुसार खर्च करो मात्र शब्दों में रामराज्य मत लाओ, बल्कि जल काय, वनस्पति काय, अग्नि काय, वायु काय, इन सारे के सारे जीवों की रक्षा करना हमारा आपका कर्तव्य है।

एक अरब जनता से अधिक को दिमाग नहीं आया।

यह बीज के संरक्षण की अपेक्षा से है। इतिहास पढो इसका चिंतन नहीं करोगे तो आपकी धर्म के प्रति आस्था उठ नहीं सकती, दूसरों पर नहीं अपनी बात का ध्यान रखो यह अच्छाई नहीं समाप्त कर दे। दिया एक से दस बोरी बीच में विदेशी बीज आ गया।

सोयाबीन-सोयाबीन ले जाओ विदेशी बीज ने हैरान कर दिया, कहते हैं यह धरती की उर्वरा शक्ति नष्ट कर देता, इसमें ऐसी खाद्य डालनी पड़ती। प्रतिवर्ष उसकी शक्ति बढ़ाना चाहते, आप खेत समाप्त करो बीज खराब कर ही रहा। मैं देखता आया उन्हें भारतीय संस्कृति की ओर दृष्टि है नहीं तो आगे चलकर अनेक कठिनाईयों से घिर जायेगी, आज तक सड़ा गला नहीं खिला वह हमेशा-हमेशा सत्ता के साथ अनुबंध कर रखा मूसलाधार पानी दर्श फिर मात्रा कर बाहर आ रहा।

हम जानते हैं भारतीयता क्या है दार्शनिकता क्या है सभी प्रकार की संस्कृति भारत में है हर बीज का मिश्रण यहीं पर मिलेगा, यहाँ पर तंत्र मंत्र या नहीं मिलेगा भारत में विज्ञान तंत्र कहाँ से है? 18वीं शताब्दी में विज्ञान तंत्र ज्ञान था सोचे अनुवाद कर हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी में है अंग्रेजी संस्करण मूल है।

चार धाम पश्चिम मिल गये उन्नति नहीं हुई। वह ऊपर की ओर उठे पसीना आ जायेगा, अन्य कोई राष्ट्र उन्नत नहीं, आंतरिक भाव से कोई धन है वह दयामयी धर्म ही है अतीत में इसी पर निर्धारित है इस पर सोच रखना चाहिए। भ. आदिनाथजी और भ. महावीर स्वामी जी भी हुए उन लोगों ने हमेशा कहा वनवास है जाकर रहे राम, पाण्डव भी रहे हमारे यहाँ तो वनवास जाने की बात। चाहे वो राज भवन या कुटिया की आवश्यक नहीं राम ने संन्यास, धारण किया उनके साथ भैया भी पूरी प्रजा भी गई क्या करें एक सीमा होती, लेकिन रह गये उन्होंने जीवन को पढ़ा कहा दुख है जमकर के परीक्षा दी और कठिन साधना की गई।

'विवेक के स्तर से नीचे आने पर वासना व्यक्ति को शैतान बना देती।' हम इंसार हो गये पर कभी भी भगवान से भेंट होने वाली नहीं। हम अमरकंटक से कोरवा गये, बहुत कम बस्ती वहाँ विद्युत का विशेष उत्पादन होता वहाँ से छत्तीसगढ़ प्रवेश करना था लोगों ने कहा महाराज हम यहाँ पर काम करते देखने योग्य, हम देख लेंगे, लेकर गये उसको ऊपर चढ़कर देखा या जहाँ से उत्पादन होता, बिल्कुल लाल और कुछ भी नहीं कोयले जल रहे टनो टन विद्युत उत्पादन होता है समझने का प्रयास करेंगे यह लाइन क्या रेल पटरी की तरह इसका संग्रह कहाँ होता।

आपने अच्छा बुला लिया, इस लाइन से उत्पन्न होती जहाँ भेज रहा हूँ वहाँ भ. आदिनाथजी, भ. महावीर स्वामी ने कहा संग्रह के लिए नहीं संग्रह नहीं करना चाहिए, उन्नति अवश्य होगी, आने से पूर्व कहाँ पर कितना बेचना ताकि इसका उत्पादन हो जाये। धान रख जाये लट खा जाये, घर में धान कब तक रख सकते। धान दो साल तक लाकर पीस लो तो 8 दिन पश्चात लट् उग जाये, गर्मी के मौसम में अलग, वर्षा के मौसम में अलग मर्यादा रहती खिलाकर चूर्ण कर दो। आटे की आठ दिन रोटी की शाम तक ताकि अब कोई बता नहीं सकता है वह इतनी सुन्दर थी 24 घंटे इसके उपरांत पेट में भारी हो तो आठ व्यक्ति चाहिए कांधे को कई प्रकार के वेट होते। 24 घंटे रह नहीं सकता पेट में रोगी के एक दिन लेकिन धान से किसान खुशहाल हो जायेगा।

आम को भी रख रहे बेमौसम के फल-फूल खाने वालों, बे मौसम ही उठ जाओगे। लाओ खिलाओ और आनंद ले हम बैठे एक दिन खा लिया बचा नहीं, पच गया, पेट खाली रासायनिक प्रक्रिया रस रुधिर इत्यादि में चला गया, मन की रचना पाथेय तक पहुंच गया। प्राण आने तक उस रोटी की अवधि कितनी बढ़ गयी कितनी रोटी पच जाती मन आदि प्राणों को आत्म साध कर लेता है। पात्र दान का प्रभाव बढ़ जाता है तपस्या करने को देओगे, वह महावीर जैसे अहिंसा के उपकारी हो जाता। यह किसान मानवता बताता है मेरा परिश्रम उन राम, महावीर, पाण्डव तक पहुंच जाये कर्तव्य की ओर देखो, चार दिन मिले हैं परिग्रह मूर्च्छा का नाम है।

जबलपुर के पास वरगी स्थान है वहाँ की बात आप सब को बताना चाहता हूँ। वहाँ के लोग बोले महाराज यह डेम देखना, चले गये, ऊपर पानी खड़ा नीचे लेकर गये हम पानी के भीतर जा रहे दिखाते इतना सारा-सारा पानी बांध (रोक) दिया, इसमें होल है लीकेज हो रहा है इसके भीतर ले जा रहे इस पानी के वेग को रोकने थोड़े-थोड़े लीकेज पाइंट रखे नहर जिसमें प्रेसर न पड़े, इस संग्रह खर्च करना आवश्यक है ज्यादा इस वेग में खर्च करेंगे तो बाँध टूट सकता है।

पहली रोटी गाय की थी, इसका अर्थ यह त्याग के साथ भी जीवन चल सकता। यहाँ अपरिग्रह वाद का नाश लगाते यह ध्यान रखो उनके पास अतिथि संविभाग की ओर दृष्टि जाती उसका संग्रह होता नहीं, हमारे यहाँ शास्त्रों में लिखा ध्यान है गौदान का उल्लेख है जब कोई बड़ा अपराध करता साधु (संन्यासी) के पास जाकर वह प्रायश्चित की याचना करता है, तब उसे प्रायश्चित में 25-30 गायों को दानकर बताया ताकि उसका जीवन निर्वाह हो जाये आपके भीतर लगा हुआ पाप है वह गौदान से नष्ट हो जाता है।

गाय को बेचा नहीं जाता और पता है आप विदेश में बेच रहे हैं। मांस निर्यात कर रहे हैं। कभी नहीं फलेगा, प्रत्येक मनुष्य दान स्वरूप प्रमुखता से कन्या दान, गौदान, भू दान, अपनी शक्ति के अनुसार दान कर सकता है।

अभी कलिकाल का अंत नहीं आया, कोई भी आ जाये हमेशा राष्ट्रीय पक्ष रखना, वरगी डेम को याद रखना, कोरवा विद्युत उत्पादन को याद रखना, हम परिग्रह की मूर्च्छा में ना जायें। आध्यात्मिक वैभव सब जीव हमेशा सुखी रहे। भावनाओं को मूर्त रूप देने दो, पुरुषार्थ करो।

यही प्रार्थना वीर से अनुनय से कर जोर
हरी भरी दिखती रहे धरती चारों ओर

भाव को बदलो तो भव बदल जायेंगे

प्रवचनांश : आचार्य श्री सुनीलसागरजी

'सोच को बदलो तो
सितारे बदल जायेंगे,
लहरों को बदलो तो किनारे बदल जायेंगे।
बदलने से सब कुछ बदलता है दुनिया में,
भाव को बदलो तो भव बदल जायेंगे ।

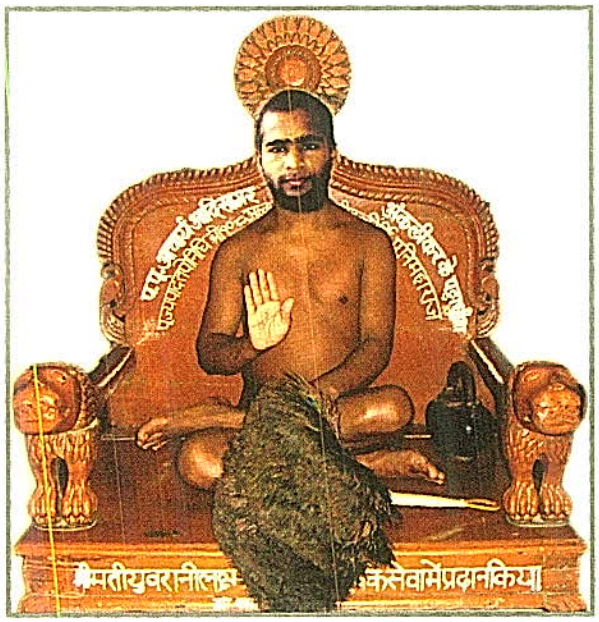

कल तक हम जो थे, आज भी हम वही हैं और आगे भी हम वही रहेंगे, यह हमारी सोच व्यर्थ है। इस सोच से मारा उत्थान नहीं होगा। बदलने की जिम्मेवारी हमारी है। महावीर स्वामी ने प्रत्येक व्यक्ति को आत्म स्वतंत्रता का सूत्र दिया है। अपने उत्थान व अवसान के लिए हम स्वयं जिम्मेवार हैं। तत्व ज्ञान को समझेंगे तो कुछ अपने आप में बदलाव पायेंगे। हमें कैसे परिणमित होना चाहिए इस पर निर्भर करता है। हम नोटों की गिनती रखते हैं, कितनी गाड़ियां हमारे पास हैं इसकी गिनती हम रखते हैं, कितने बंगले हैं, परिवार में कितने सदस्य हैं इन सबकी गिनती हमें पता रहती है, बाहर के सभी चीजों की गिनती हम रखते हैं, पर स्वयं के परिणामों की गिनती हम नहीं रखते हैं। अपने परिणामों की गणना हमें मालूम हो तो जीवन में विकास के अवसर होते हैं, पर यह बात हम नहीं समझे तो कीड़े-मकोड़े की तरह जीवन जीना होगा और उन्हीं की तरह मरना होगा।

बरसात के दिन थे। एक छात्र स्कूल में देरी से पहुंचा। शिक्षक ने छात्र से एक घंटा देरी से आने का कारण पूछा। शिष्य ने जवाब दिया, गुरूजी बारिश बहुत हो रही है, मैं एक कदम स्कूल की ओर बढ़ाता तो दो कदम घर की ओर पीछे सरक जाता। बार-बार यही होता गया मैं एक कदम स्कूल की ओर बढ़ाता तो दो कदम घर की ओर पीछे सरक जाता। अंत में मैंने युक्ति लगाई एक कदम घर की ओर बढ़ाया तो दो कदम मैं स्कूल की ओर सरक गया। सरकते-सरकते मैं यहाँ तक आ गया। इसी तरह हमें भी युक्ति से काम करना होगा। एक कदम हमें घर की ओर बढ़ना होगा ताकि दो कदम पीछे हम मंदिर की ओर सरकते आ जायेंगे। हमें अपने परिणामों की संभाल करना जरूरी है।

ऊपर से आसमान में सूर्य प्रखर तेज के साथ है। नीचे धरती गरम है, प्यास जोरदार लगी है, पर पीने को पानी नहीं। ऐसी स्थिति में राहगीर को रास्ते में एक हरा वृक्ष मिला, वहाँ उसे पानी भी मिला। प्यासा पानी दिखते ही पानी को जल्दी से पीने लगा, उस समय वह प्यासा यह नहीं देखता है कि यह किस कुँए का पानी है, खारा है कि मीठा है वह तो उस पानी को अमृततुल्य समझकर पी लेता है। वैसे ही धर्म पिपासुओं को जो भी धर्मलाभ, धर्म उपदेश प्राप्त हो रहा है उसे अमृत समझ कर ग्रहण करना चाहिये, एक क्षण भी व्यर्थ नहीं करें। अगर धर्म की प्यास है तो क्षुल्लकजी के प्रवचन से भी बहुत कुछ प्राप्त हो सकता है और प्यास नहीं तो आचार्यश्री के प्रवचन से भी ....

रत्नकरंडक श्रावकाचार में

''ज्ञानध्यान तपोरक्तस्, तपस्वी स प्रशस्थते।''

आचार्यश्री समंतभद्र स्वामी ने कहा है, जो ज्ञान-ध्यान में लीन है, तपस्या में लीन है वही तपस्वी प्रशंसा योग्य है। साधु यहाँ आये हैं वे तो ज्ञान-ध्यान अर्जन करेंगे और श्रावकों को भी ज्ञान देने का प्रयास करेंगे। जो भोला भंडारी होता है उन्हें भी गुरुवर वही मार्ग दिखाते हैं जिस पर वे चल रहे हैं। तपस्वी रूखा-सूखा खाकर भी प्रसन्न रहते हैं। हम अनावश्यक को आवश्यक समझकर दुःखी हो रहे हैं।

एक व्यक्ति की थाली इतनी पंच पक्वान्न से भरी रहती है कि उसे पहले क्या खाये और क्या छोड़े यह समझ में नहीं आता और दूसरी ओर एक व्यक्ति को यह चिंता होती है कि आज क्या खाये? एक माता के पास इतनी साड़ियाँ होती है कि वह जल्दी पसंद नहीं कर पाती है कि मंदिर जाते कौन सी साड़ी परिधान करूँ, दूसरी ओर देखा जाये तो एक माता को शरीर ढांकने के लिए भी साड़ी नहीं है, यह विसंगति है हमारे समाज की। अगर हमारे पास धन है तो योग्य पात्र, योग्य स्थान पर दान देकर समाज की विसंगति दूर करने में हमारे धन का सदुपयोग हो सकता है।

प्रस्तुति : अमृता दीदी

---

26 जून 2014 बृहस्पतिवार तदानुसार आषाढ़ बदी चौदस, विक्रमी संवत् 2071 वीर निर्वाण संवत् 2540 पूज्य मुनि महाराज पावन सागरजी का 16 दिन के बाद आहार लाला संजय जैन, रिवाड़ी वाले, मकान नंबर बी-3, ग्रीन पार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली - 110 016 के निवास पर हुआ।

उनकी विधि थी कि जो माता-पिता-पुत्र-पुत्री, द्वार पर चार गोले लेकर खड़े होंगे, मैं उनके यहाँ ही आहार लूँगा।

- शिखरचन्द जैन, नई दिल्ली

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है ।

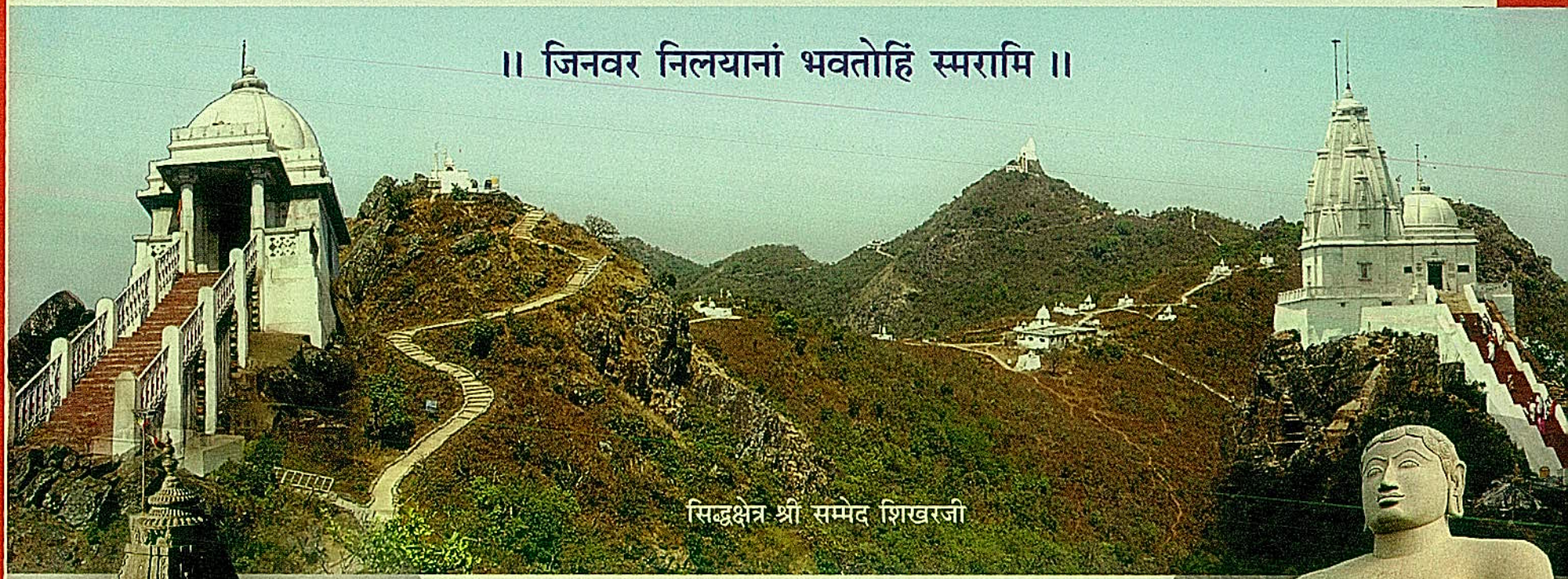

सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी

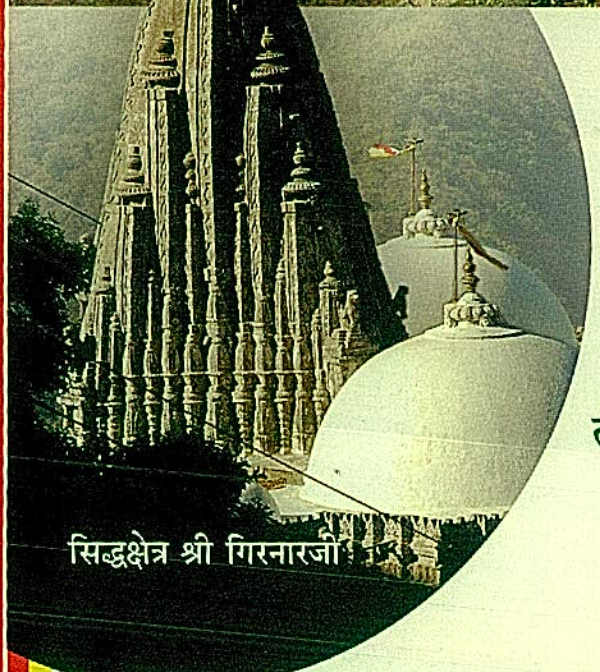
सिद्धक्षेत्र श्री गिरनारजी

हमारी संस्कृति - हमारी विरासत

तीर्थ हमारी श्रद्धा, भक्ति और आस्था के प्राण हैं।
तीर्थ हमारी संस्कृति और धर्म के प्रतीक हैं।
तीर्थ हमारी मोक्ष साधना के प्रेरक निमित्त हैं।

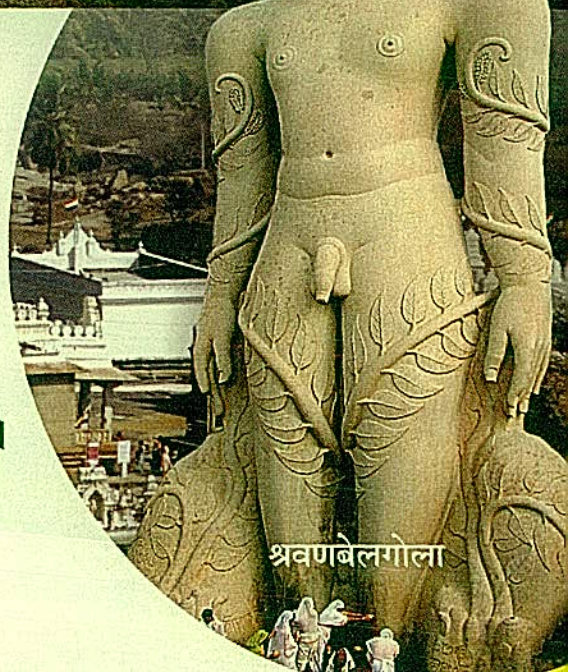
श्रवणबेलगोला

मान्यवर,

पर्वराज पर्यूषण के इस सुमंगलकारी अवसर पर आपकी भक्ति भावना संबालत हो और रत्नत्रय साधना के मार्ग पर आप

गतिमान होते रहें, यही हमारी शुभकामना है।

तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन तथा सम्यक विकास हेतु कटिबद्ध, आपकी यह शीर्षस्थ संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने सभी तीर्थों की समस्याओं के समाधान हेतु सकारात्मक प्रयत्न किये हैं एवं करने हेतु प्रतिबद्ध भी है।

शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर, ऊर्जयंत श्री गिरनारजी, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर एवं श्री ऋषभदेव (केसरियानाथजी) आदि सभी दिगम्बर तीर्थों की अस्मिता के विरुद्ध उठे हर कदम का सशक्त प्रतिकार तीर्थक्षेत्र कमेटी ने किया है और करते रहने को प्रतिबद्ध भी है।

तो आइये, हम सब मिलकर पर्यूषण पर्व पर तीर्थरक्षार्थ दान देकर एक नई शुरुआत करें।

अपने धर्मस्थल हैं, अपनी संस्कृति की फुलवारी ।
इनकी रक्षा करनी है, अपनी जिम्मेदारी !!

निवेदक

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- ४०० ००४
फोन : ०२२-२३८७८२९३, फैक्स : ०२२-२३८५९३७०
E-mail : tirthvandana4@gmail.com

कृपया अपनी दानराशि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के बैंक आफ बड़ौदा, वी.पी.रोड ब्रांच, मुंबई-४ के सेविंग खाता क्रमांक १३१००१००००८७७० अथवा बैंक आफ इंडिया, सी.पी.टैंक ब्रांच, मुंबई-४ के सेविंग खाता क्रमांक ००१२१०१०००१७८८१ में जमा करा कर उसकी सूचना देने की कृपा करें।

कृपया इस पत्रिका को श्री मंदिर जी में प्रदर्शित करने की कृपा करें।

अहिंसा/करुणा की महानदशा – चौमासा

निर्मल शास्त्री (हटा)

भारत में धर्म का वैभव अनुपमेय है। यहाँ अनेक संस्कृतियाँ हैं। जिसमें जीवदया, करुणा, अहिंसा आदि को सर्वोपरि माना गया है। प्रत्येक संस्कृति के अपने नियम व सिद्धांत है। परन्तु धर्म की व्याख्या और व्यवस्था में अधिक अंतर नहीं दिखाई देता है।

श्रमण संस्कृति के श्रमण संविधान में चातुर्मास जहाँ आध्यात्मिक जागृति का पर्व है। वहाँ जीवदया, करुणा, मैत्री, प्रमोद और अहिंसा का महान पर्व भी है। इसमें चतुर्विध संघ अपने व्रतों की सीमाओं में रहकर आत्म विशुद्धि को बढ़ाते हैं। जिनवाणी की आराधना संरक्षण, संवर्धन के साथ–साथ समाज को धर्म से जोड़कर विश्व कल्याण की भावना में संलग्न रखते हैं।

वर्षायोग का समय श्रमणों एवं श्रावकों के लिए धर्म ध्यान व आराधना के लिए उत्तम है। इस समय समस्त गृहकार्यों से मुक्त होता है गृहस्थ। वर्षा के कारण व्यापार में मन्दता, विवाहादि में कमी एवं धार्मिक अनुष्ठानों में वृद्धि हो जाती है। अतएव वर्षायोग अहिंसा और करुणा की महान दशा को उत्पन्न करने का महान अवसर होता है।

वर्षायोग की प्राचीनता मूलाचार ग्रन्थ, हिन्दू ग्रन्थ बाल्मीकि रामायण और बौद्ध ग्रन्थों में देखने को मिलती है। जिसमें श्रमण साधु निरंतर उसका पालन करते हुए अहिंसा की अवधारणा को व्यवस्थित किए हुए हैं।

वर्षायोग श्रावण, भाद्रपद, अश्विन और कार्तिक इन चार महीने के योग को कहते है। अतः स्पष्ट है कि वर्षा ऋतु के दो माह नहीं अपितु वर्षाकाल के चार माह से है। चार माह वर्षा होती है जिसमें सूक्ष्म व स्थूल जीवों की उत्पत्ति होती है उनकी विराधना न हो, साथ ही उनके प्रति दया की भावना बनी रहे अतः यह काल चातुर्मास। चौमासा सार्थक संज्ञा को लिए हुए है।

वर्षायोग की स्थापना आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन की जाती है। जिनसेन स्वामी ने आषाढ़ माह की प्रतिपदा एवं अनेक आचार्यों ने पंचमी तक का विधान किया है। इसकी समाप्ति कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन की जाती है।

वर्षायोग की स्थापना व निष्ठापन अनेक भक्तियों पूर्वक की जाती है। इसमें मंगलगोचर प्रत्याख्यान विधि पूर्वक उपवास ग्रहण करके प्रतिक्रमण विधि की जाती है। सिद्धभक्ति, शांतिभक्ति, समाधिभक्ति आदि पढ़ी जाती हैं।

चौमासा अनेक प्रकार के लाभ को प्रदान करने वाला होता है। इसके माध्यम से चतुर्विध संघ का मंगल सान्निध्य मिलता है जिससे धर्म के स्वरुप और धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। संतों के समागम से संसार के स्वरुप, मोह, राग–द्वेष के प्रति बैठी कुत्सित अवधारणा को दूर करने का योग बनता है। जिनेन्द्र भगवान के तीर्थ का स्वरुप और उस पर चलने की प्रेरणा मिलती है। संयम की ओर कदम बढ़ते हैं। प्रत्येक जीव के प्रति करुणा की भावना उत्पन्न होती है। हमें अपने स्वरुप का आभास होता है। अतः क्रोध, मान, माया, लोभ के प्रति हमारी समझ विकसित होती है जिससे दूर होने का प्रयास किया जाता है। अतएव चौमासा/वर्षायोग स्व–पर के प्रति अहिंसा को जागृत करता है और करुणा को उत्पन्न करता है। अतएव हम कह सकते है कि चौमासा अहिंसा/करुणा की महानदशा को उत्पन्न करता है। चौमासे में संतो एवं साध्वियों के द्वारा श्रावकों तक महान उपकार किये जाते हैं। वास्तविकता का भान करवाकर वे हमें जीवन जीने की कला सिखाते है। अवसाद, निंदा, गर्हा, आलोचना आदि से पृथक करके मानवीय गुणों से संलग्न करते हैं। हमारे मनोमालिन्य को दूर करने का प्रयास भी करते हैं। प्रत्येक जीव को सत्राह ने प्रवृत्त करने का प्रयास भी करते हैं। वास्तव में संतत्व की साधना से ईश्वरत्व की प्राप्ति का दर्शन इस चौमासे के माध्यम से प्राप्त होता है।

संत ज्ञान तप ज्ञान लीन हों,
संयम से करते तैयार
चौमासे में करुणा बरसे
खोल कपट नट शट के द्वार
श्रावक जन सब धर्म राह पर
नियम व्रतों को अंगीकार।
अपने सौभाग्य सदन का
सुफल भाव निर्मल स्वीकार।

श्रीमती रमा जैन का देहावसान

श्रीमती रमा जैन धर्मपत्नी श्री आर.सी.जैन, संस्थापक-प्रधानाचार्य- दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली का निधन ४ सितम्बर, २०१४ को उनके निवास स्थान दिल्ली में हो गया। श्रीमती रमा जैन अत्यन्त मृदुभाषी, सरल स्वभावी एवं धर्म परायण महिला थीं। उन्होंने अपने जीवन के ४५ वर्ष विद्या दान में व्यतीत किये। अग्रवाल परिवार में जन्म लेने के उपरांत भी उनकी जैन धर्म तथा देव शास्त्र गुरु में गहरी आस्था थी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

धन साधन है साध्य नहीं। जैसे नाव को चलाने के लिए सरोवर में जल।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
Bharatvarshiya Digamber Jain Tirthkshetra Committee

निवेदन पत्र

16/08/2014

माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी
प्रधानमंत्री- भारत सरकार
7, रेस कोर्स रोड, नई दिल्ली.

विषय : मांस निर्यात एवं कत्लखानों के संबंध में।

आदरणीय मोदी जी,

सादर वंदन।

आपने अपने चुनाव अभियान में पिंक रिवोल्यूशन (Pink Revolution) के मुद्दे को बहुत ही संजीदगी से उठाया था।

भारतीय संस्कारों एवं परम्पराओं के अंतर्गत कत्लखाने / मीट एक्सपोर्ट / मांस उद्योग जैसे शब्दों का कोई स्थान नहीं है। उन्हें उद्योग व्यापार की भाषा में लाना नितांत शर्मनाक है। आपके नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी पूर्ण बहुमत से पदासीन हुई है एवं हम सभी आशान्वित हैं कि;

1. मांस व्यापार को उद्योग के रूप में छूट, सुविधाएं, टैक्स वेनीफिट शीघ्र वापस ले लिये जावेंगे।
2. कत्लखानों के नये लाइसेंस या नवीनीकरण नहीं किये जावेंगे।
3. मीट प्रोसेस यूनिट्स को हतोत्साहित कर उद्योग की परिधि से हटाया जावेगा।
4. पिंक रिवोल्यूशन के स्थान पर दूध एवं डेरी प्रोडक्ट्स का अमूल रिवोल्यूशन (Amul Revolution) का राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाकर उसे बढ़ावा दिया जावेगा।
5. सभी शासकीय एवं प्रशासकीय भोजों / डिनर कार्यक्रमों में केवल शाकाहारी पदार्थ ही रखे जावेंगे तथा शराब नहीं परोसी जावेगी।

आशा ही नहीं हमें पूर्ण विश्वास है कि गाय / गोमाता को राष्ट्रीय पशु घोषित कर गोवंश की सम्पदा को पुन: बढ़ा सकेंगे।

हम विश्वास दिलाते हैं कि समग्र जैन समाज एवं शाकाहारी बहुजन समाज पूरे भारतवर्ष में गौशालाओं के विकास एवं संवर्धन में तन-मन-धन से समर्पित है और भविष्य में भी रहेगा।

भवदीय,
(सुधीर जैन)
राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं
समस्त तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार

प्रतिलिपि प्रेषित -

माननीय श्री अमितभाई शाह
राष्ट्रीय अध्यक्ष - भारतीय जनता पार्टी
11, अशोक रोड, नई दिल्ली - 110 001

माननीय श्री अरुण जेटली
केन्द्रीय वित्त मंत्री - भारत सरकार
रूम नं. 134, नॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली - 110 001

माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज
केन्द्रीय विदेश मंत्री - भारत सरकार
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-110 011

माननीय श्री अनंत गीते
केन्द्रीय उद्योग मंत्री - भारत सरकार
रूम नं.176, ई-विंग, उद्योग भवन, नई दिल्ली-11

माननीय श्री राधा मोहन सिंह
केन्द्रीय कृषि मंत्री - भारत सरकार
कृषि भवन, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद रोड,नई दिल्ली-110001

माननीय श्री मोहन भागवत जी,
प्रमुख-राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, नागपुर
ओम भवन, रेशम बाग, नागपुर (महाराष्ट्र).

निवेदन है कि उपरोक्त संदर्भ में हमें मार्गदर्शन देकर कार्यों को गति प्रदान करने की कृपा करें।

अनुरोध : देश के सभी तीर्थक्षेत्रों, मंदिरों, संस्थानों, सामाजिक संगठनों से अनुरोध है कि उपरोक्त पत्र भारत के प्रधानमंत्री जी को रजिस्टर्ड ए.डी.से भिजवायें और उसकी प्रति उपरोक्त सभी माननीय मंत्रियों को इस अनुरोध के साथ भिजवायें कि हमें मार्गदर्शन देकर कार्यो को गति प्रदान करने की कृपा करें।

राष्ट्रसंत मुनिश्री पुलक सागर महाराज ने स्कूली बच्चों को दिये सफलता के सूत्र- आज का विषय था 'कैसे बनाये केरियर''

ग्वालियर २२ अगस्त। बच्चों तुम ही मेरा भारत हो, तुम ही भारत के भाग्यविधाता हो। भगवान भारत का निर्माण करे या नही लेकिन तुमसे ही होगा इस देश का निर्माण । एक बच्चे को संस्कारित करना सौ स्कूल खुलवाने के समान है। क्या पता वह संस्कारित बच्चा भविष्य का प्रधानमंत्री हो। कोई इस दुनिया में महापुरूष पैदा नही हुआ, पैदा तो मोहनदास हुऐ थे, वह महात्मा गांधी बन गये, नरेन्द्र विवेकानन्द बन गये, वर्द्धमान भगवान महावीर बन गये, सभी ने पुरूषार्थ किया, सदकर्म किए तो महापुरूष बन गये। व्यक्ति की पहचान नाम से नही बल्कि कार्य से होती है। तुम्हारे महान कार्य ही तुम्हारे नाम को अमर कर देते है। यह बात आज शुक्रवार को जैन छात्रावास स्थित जिनशरणम सभागार में राष्ट्रसंत मुनिश्री पुलक सागर महाराज ने स्कूल के विद्याथियों को सफलता के सूत्र देते हुए कही ।

गलत संगत से आती है जीवन में बुराईयां, बिना दोस्त के रह लेना लेकिन गलत दोस्त मत बनाना– हर मां बाप का सपना होता है कि उनकी औलाद एक नेक इंसान बने, शिक्षक भी तुम्हे बुराईयों से दुर रखने का प्रयास करते है, फिर यह बुराईयां आती कहां से है, ध्यान रखना बच्चों सबसे अधिक बुराई तुम्हारी गलत संगत से आती है, यह तुम्हारे गलत दोस्त ही तुम्हारे जीवन में बुराई लेकर आते है। याद रखना तुम भले ही बिना दोस्त के रह लेना लेकिन गलत दोस्त से दूर रहना। यदि दोस्ती करना ही हो तो भगवान से, अच्छी किताबों से करो। उन्होने कहा कि आकाश से गिरी पानी की बून्द शक्कर की चासनी में गिरे तो मीठी, नीम के पेड पर गिरे तो कडवी, समुद्र में गिरे तो खारा, सीप में गिरे तो मोती बन जाती है। अब बताओं पानी की बूंद तो वही है लेकिन उसे जैसी संगत मिली वह वैसी ही बन गई।

> तुम मेरा भारत हो, तुम ही भारत के भाग्यविधाता हो,
> एक बच्चें को संस्कारित करना सौ स्कूल खुलवाने के समान है
> कोई इस दुनिया में महापुरूष पैदा नही होता , महापुरूष तो बनना पडता है
> व्यक्ति की पहचान नाम से नही काम से होती है
> बच्चों डॉक्टर, इन्जीनियर बाद में बनना, पहले अच्छे इंसान बनो
> नेक इंसान बनने के लिये शिक्षा के साथ अच्छे संस्कारों का भी होना जरूरी है
> अक्षर ज्ञान के साथ जीवन के अनुभव का ज्ञान का होना भी जरूरी
>
> - मुनिश्री पुलकसागर

इन सूत्रों को याद रखना – सबसे पहले परिचय तुम्हारी राइटिंग से होता है, लिखावट अत्यंत सुन्दर होना चाहिए क्योकि राईटिंग व्यक्तित्व का दर्पण होती है। ऐसा लिखो कि काटने की जरूरत ही न पडे, क्योकि काटापीटी से सुन्दरता नही रहती। तुम रफ कॉपी में मत लिखो, क्योकि रफ में जल्दी जल्दी और गन्दा लिखोगे और वह तुम्हारी आदत बन जायेगी । सफाई का अत्यंत ध्यान रखो, तुम्हारा भोजन शुद्ध होना चाहिए, कपडे साफ पहनो, रहना और पढने का स्थान स्वच्छ हो। जीवन में प्रत्येक कार्य सलीके से करो। व्यवस्थित करो। होम वर्क जरूर करो, क्योकि होमवर्क से ही तुम अच्छे परिणाम पा सकते हो पढाई को पूरे वर्ष भर करो, जो बच्चे परीक्षाओं के समय ही पढकर पास होते है वह डिप्रेशन के शिकार हो सकते है।

एक अवगुण जीवन को बर्बाद कर देता है – जैसे हजार लीटर दूध में एक नीबू डाल दिया जाये तो वह दूध खराब हो जाता है वैसे ही व्यक्ति के हजार गुणों बैकार हो जाते है एक अवगुण से। एक अवगुण जीवन को बर्बाद कर देता है। जीवन को लायक बनाने में सौ साल भी कम पड जाते है ओर नालायक बनने में एक क्षण लगता है। तुम तो ऐसे नेक इंसान बनो कि अपने अच्छाईयों से दूसरों की भी बुराईयों को भी दूर कर सको। याद रखना मेरे बच्चों अपने जीवन को नशे से बचाकर रखना, क्योकि नशा एक ऐसी दीमक है जो जीवन को खोखला कर देती है। अपने को कमजोर मत समझो, तुम महान हो, तुम भी वह सब कर सकते हो जो महापुरूषों ने किया था। जीवन में एक काम तो ऐसा जरूर करना जिससे

तुम्हारा नाम हो जाये। तुम हमेशा अपना मित्र अपने से अधिक तीव्र बुद्धि वाले को बनाओ।

वन्दे श्री गुरूवरकृकृ ओ ओ कृभजन पर नश्त्य कर मंगलाचरण की दी प्रस्तुति .– .जैन महिला परिषद शाखा ग्वालियर की प्रीती गोधा, रेखा जैन, वर्षा जैन, अनुजा बाकलीवाल, निशा गंगवाल,अर्पिता अजमेरा ने गुरूदेव के जीवन पर आधारित भजन वन्दे श्री गुरूवर.. ओ ओ ..पर नृत्य कर मंगलाचरण की प्रस्तुति दी

चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलित –आज प्रवचन सभा के भगवान पार्श्व के चित्र का अनावरण आई टी एम कालेज के दौलतसिंह जी, नईदुनिया के सम्पादक अनूप शाह, एवं रेडियन्ट स्कूल की प्रचार्या मौसमी चटर्जी ने किया। दीप प्रज्वलित कामिनी सिहं एवं जितेन्द्रपाल सिंह एवं डा मनोरमा पांडया ने किया। मंगल कलश की तश्प्ती जैन ने की मुनिश्री का पादपच्छालन प्रदीप बडजात्या इन्दौर ने किया मुनिश्री को शास्त्र भेंट योगिता जैन इन्दौर एव राकेश जैन जयपुर ने किया इन स्कूल के बच्चों ने लिया भाग – आज के प्रवचन सभा में मुनिश्री को सुनने के लिये रामनारायण विद्यालय, रेडियन्ट स्कूल, डी ए व्ही स्कूल, गायत्री विद्यालय के छात्र छात्राओं ने भाग लिया ।

आज होगें छात्रों के लिये विशेष प्रवचन– आयोजन समिति के प्रवक्ता ललित जैन ने बताया कि शनिवार को जिनशरणम सभागार जैन छात्रावास में राष्ट्रसंत मुनिश्री पुलक सागर महाराज के छात्रों के लिये विशेष प्रवचन मंगल प्रवचन प्रात ८.३० से होगें। आज के प्रवचन का विषय होगा कैसे करें समाज का निर्वाण''

ललित जैन प्रवक्ता, चातुर्मास कमेटी

धर्म विपत्तियों में मुस्कुराना सिखलाता है ।

गलती करना अपराध नहीं, गलती को स्वीकार नहीं करना बड़ा अपराध है

अंतर्मना मुनि श्री प्रसन्नसागरजी महाराज

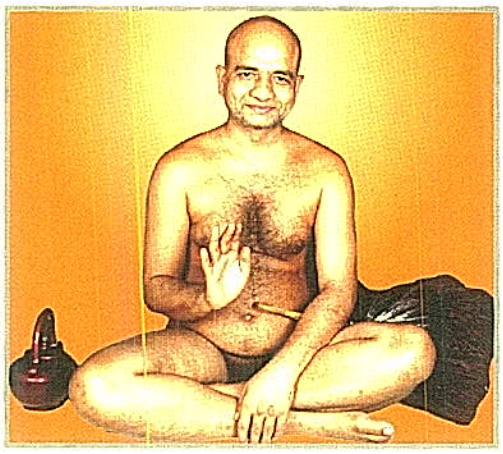

पुष्पगिरि तीर्थ प्रणेता दिगंबराचार्य पुष्पदंत सागरजी के आत्मीय शिष्य अंतर्मना मुनि श्री प्रसन्नसागरजी महाराज श्री ने कहा कि तुम्हें तुम्हारे मां बाप डांटे तो बुरा मत मानना, बल्कि सोचना गलती होने पर मां बाप नहीं डांटेगे तो कौन डांटेगा। और कभी छोटी सी गलती हो जाये तो यह सोचकर माफ कर देना कि गलती छोटे नहीं, तो कौन करेगा। " भूल से घबराईये मत " भूल उन्हीं से होती है जो कुछ करने की सोचते हैं। मैं तुमसे कहता हूं गलती करो, गल्तियां करो..... सौ बार करो..... हजार बार करो बस ध्यान रहे एक गलती दुबारा मत करो।

मधुर भाषी, मधुर कंठ के धनी प्रसन्नसागर जी ने कहा कि अज्ञानता और अंहकार के वश, हम भूल और अपराध पर अपराध करते चले जाते है। किये गये इन भूल अपराधों की शुद्धि क्षमा और समता के आचरण से होती है। हम उनसे तो क्षमा मांगते है जिनसे हमारी कोई कटुता नहीं है, या जिनसे कोई बुराई या मलीनता नहीं है। यथार्चना में हमें उनसे क्षमा मांगनी चाहिये जिनके प्रति हमसे कुछ अशोभनीय व्यवहार हुये है। हमने धरती को कवट पंहुचाया है, इसलिये धरती से क्षमा मांगनी चाहिये। हमने पेड़ पौधों का संहार किया इसलिये पेड पौधों से क्षमा मांगनी चाहिये। हमने पशु पक्षियों पर जुल्म किया इसलिये पशु पक्षियों से भी क्षमा मांगनी चाहिये। फिर इंसान से, साधु संतों से भगवान से क्षमा मांगनी चाहिये जबकि हम करते बहुत उल्टा काम है। भगवान से पहले क्षमा मांगेगें और फिर गुरू से मांगेगें। इसके बाद उन इंसानों के साथ क्षमा वाणी पर्व मनाते है या हम उनसे **"तस्य मिच्छामि दुक्कडं"** बोलते है जिनसे हमारी मित्रता है। पशु पक्षी और धरती से क्षमा मांगने जैसी बात तो हमारे विचार में है ही नहीं। यदि हम भाव भीने इस पर्व के प्रयोजन को आत्मसात करना चाहें तो हमें प्रकृति, पेड पौधों से, पशु पक्षियों और प्राणी मात्र से क्षमा मांगने की जरूरत है।

अंतर्मना संत ने कहा कि– **क्षमावाणी पर्व यानि मनोमालिन्य को धोने का पर्व क्षमावणी यानि अंतसकी कालिमा को प्रक्षालित करने का पर्व क्षमावणी यानि कसाय विमोचन का दिन क्षमावणी यानि बैर की गांठ खोलने का दिन।** यदि हमने अपने बैर की गांठ को नहीं खोला तो समझना कि हमारे संसार की भी कहानी बहुत लम्बी है। इस बैर को मिटाने के लिये, छोटे बडे का भेद भूलकर क्षमा मांग लेना कहना भाई मेरे मुझे क्षमा कर। मैं अपने अंहकार के कारण इस बैर विरोध को बढ़ाता रहा। लेकिन आज किसी से बैर विरोध नहीं है। मैं सबसे एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों से क्षमा मांगता हूं।

ये मत सोचना कि गलती उसने की, अरे गलती किसी से भी हुई हो लेकिन हाथ जोडकर के अपने संसार के बंधन को खोल देना। यदि गांठ हमने लगाई है तो वह गांठ हमें ही खोलना पड़ेगी।

प्रसन्नसागर ने कहा कि मैं आपसे बहु करूणा से कह रहा हूं कि आप हाथ जोडकर क्षमा मांगना, पैर पकडकर क्षमा मांग लेना। कितने–कितने लोगों से तुम्हारी दुश्मनी है, बैर विरोधी है। गल्तियां सब से होती है लेकिन गलती को स्वीकार नहीं करना बडा अपराध है। अंतर्मना संत ने कहा– गुण अवगुण, अच्छाई बुराई, राग द्वेष, पुण्य पाप से सेवक साथ चलते है दोनों पूरक है। निन्दक प्रशंसक दोनों संसार की देन है। दीर्घ संसारी का आनन्द, निन्दा आलोचना में है। दुनिया में जितने भी महापुरूष हुये हैं उन महापुरूषों के पीछे कोई न कोई खलनायक जरूर रहा है। इतिहास उठाकर देखो किसी भी महापुरूष का जैसे राम के पीछे रावण, कृष्ण के पीछे कंस, पार्श्वनाथ के पीछे कमठ, महावीर के पीछे मारिची और मेरे पीछे.. ..। दुष्टों ने अपनी दुष्टता में कोई कसर नहीं रखी। और महापुरूष आगे बढ़ते रहे।

मुनि श्री ने कहा– जो तुम्हारा बुरा सोचता है और करता है उसके प्रति भी तुम मंगल और कल्याण का भाव रखो। और उसे माफ कर दो कारण कि वह भी किसी जन्म का तुम्हारा भाई है। अपने ही दांतो से कभी जीभ कट जाया करती है। क्या तुम अपने दांत तोड डालते हो नहीं ना तो फिर अपने ही किसी भाई की भूल पर इतना आग बबूला क्यों होते हो। क्या मालूम नहीं कि हिन्दुस्तान एक क्षमाशील राष्ट्र है। सहन करना और क्षमा करना इस देश का चरित्र है "एक बार गलती करे वह अन्जान है" जो दो बार गलती करे वह नादान है और जो बार बार गलती करे वह पाकिस्तान है और जो हर बार क्षमा करे वो हिन्दुस्तान है।

भूल होना मानव की सहज– प्रकृति है। भूल को सुधारना मानवीय– संस्कृति है।

भूल को भूल नहीं मानना– मानवीय विकृति है। भूल कर भी भूल न करें– वह प्रभु की आकृति है।

सबसे क्षमा सबको क्षमा ॐ नमः।

बुद्धिमान व्यक्ति सुनते सब की हैं लेकिन करते मन की है।

नगरों में धर्मगुरुओं के आगमन की उपयोगिता

- डॉ. कु. मालती जैन, मैनपुरी

सेवानिवृत्त प्राचार्य-श्री चित्रगुप्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतिपाद्य विषय के मुख्य बिन्दु का स्पर्श करने से पूर्व यह जानना परम आवश्यक है कि जैन आगमों में धर्मगुरु का क्या स्वरूप है? यों तो संसार में गुरुओं की कमी नहीं है। एक ढूंढो अनेक मिल जाते हैं। महाकवि तुलसीदास ने कलयुग में संन्यासियों की दिनदूनी रात चौगुनी बढ़ती हुई संख्या पर व्यंग्य करते हुए लिखा था-

'नारि मुई गृह सम्पति नासी,
मूड़ मुड़ाय भयै सन्यासी ।।

- 'रामचरित मानस'

किन्तु पेट-पालन के लिए सन्यासी का वेष धारण करने वाले सही अर्थों में गुरु नहीं गुरु घंटाल होते हैं। ये स्वयं तो संसार सागर में डूबते ही हैं, अपने अनुयायियों को भी डुबाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते।

जैनेन्द्र सिद्धांतकोष भाग 2 में गुरु शब्द का विश्लेषण निम्न प्रकार किया गया है-

'गुरु शब्द का अर्थ महान होता है। लोक में अध्यापकों को गुरु कहते हैं। माता पिता भी गुरु कहलाते हैं, परन्तु धार्मिक प्रकरण में आचार्य, उपाध्याय, साधु गुरु कहलाते हैं क्योंकि वे जीव को उपदेश देकर अथवा बिना उपदेश दिए ही केवल अपने जीवन का दर्शन कराकर कल्याण का वह सच्चा मार्ग दिखाते हैं जिसे पाकर वह सदा के लिए कृतकृत्य हो जाता है। इसके अतिरिक्त विरक्त चित्त सम्यग्दृष्टि श्रावक भी उपरोक्त कारणवश ही गुरु संज्ञा को प्राप्त होते हैं।'

कवि द्यानतराय ने 'देव शास्त्र पूजा' में गुरु के स्वरूप का विश्लेषण करते हुए जैनेन्द्र सिद्धांत कोष के कथन का ही समर्थन किया है -

गुरु आचारज उबझाय साध
तन नगन रतनत्रय निधि अगाध
संसारदेह वैराग्य धार,
निरवांछि तपै शिवपद निहार
गुणछत्तिस पच्चिस आठ बीस
भवतारन तरन जिहाज ईस

निश्चय से अपना आत्मा ही अपना गुरु है-

'स्वस्मिन्सदाभिलाषित्वादभीष्ट ज्ञापकत्वः
स्वयंहि प्रयोक्तृत्वा दात्मैव गुरुरात्मनः' (इष्टोपदेश 34/30)

वास्तव में आत्मा का गुरु आत्मा ही है। क्योंकि वही सदा मोक्ष की अभिलाषा करता है, मोक्ष सुख का ज्ञान करता है और स्वयं ही उसे परम हितकर जान उसकी प्राप्ति में अपने को लगाता है।

व्यवहार से अरहंत भगवान परम गुरु है। प्रवचनसार में लिखा है -

'अनन्तज्ञानादि गुरुगुणैस्मैलोक स्यावि गुरुस्ते त्रिलोकगुरु तमित्थ भूतं भगन्तं'

- 'प्रवचनसार ता वृ./79

अनंतज्ञानादि महान गुणों के द्वारा जो तीनों लोकों में महान हैं वे भगवान अर्हन्त त्रिलोकगुरू हैं।

भगवती आराधना के अनुसार

'मुस्सूसमा गुरुणं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रै गुर्रुतया गुरुव'
इत्युच्यन्ते आचार्योपाध्याय साधनः'

(भ.आ.वि./300/511/13)

सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्र इन गुणों के द्वारा जो बड़े बन चुके हैं उनको गुरु कहते हैं। आचार्य, उपाध्याय, साधु ये तीन परमेष्ठी गुरु हैं।

'ज्ञानसार' में लिखा है -

'पंचमहाव्रतकलितोमदमंथनः क्रोधलोभभयव्यक्तः एथ गुरु रितिमन्यते तस्माज्जानीहि उपदेशं'

पंच महाव्रतधारी, मद का मंथन करने वाले, क्रोध, लोभ, भय का त्याग करने वाले गुरू कहे जाते हैं।

जैन शास्त्रों में वर्णित उपरोक्त आचरण वाले दिगम्बर मुनि ही धर्मगुरु की संज्ञा से अभिहित किए जाने योग्य हैं। पंच महाव्रत, तीन गुप्ति, पांच समितियों को धारण करने वाले ये धर्मगुरु समस्त बाह्य एवं अभ्यंतर परिग्रहों से मुक्त हो बाईस परीषहों को सहन करते हुए निरन्तर अपनी आत्मा के ध्यान में एवं परहित चिंतन में ही लीन रहते हैं।

धरती ही इनका बिछौना है, आकाश ही इनका उड़ौना है, दिशायें ही इनका वस्त्र है, तत्वों का चिंतन करना ही इनकी चर्या है-

हो अर्द्ध निशा का सन्नाटा,
वन में वनचारी चरते हो।
तब शान्त निराकुल मानस तुम
तत्वों का चिन्तन करते हो ।।

- 'श्री जुगल किशोर कृत देव गुरु शास्त्र पूजा'

धर्मगुरु के स्वरूप और आचरण का विवेचन करने के उपरांत अब हम विषय के मुख्य बिन्दु पर आते हैं कि नगरों में ऐसे धर्मगुरुओं के आगमन की क्या उपयोगिता है- एकान्त, वन प्रदेश में, प्रकृति की गोद में तत्व-चिंतन में लीन रहने वाले इन धर्मगुरुओं के चरण कमल जब बाह्य एवं अभ्यंतर दोनों प्रकार से प्रदूषित नगरों में पड़ते हैं तब नगरों का समस्त परिवेश ही परिवर्तित हो जाता है।

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये ।

नगरों में धर्मगुरुओं के आगमन की उपयोगिता का आकलन निम्न प्रकार से किया जा सकता है-

1) धर्मगुरुओं का आगमन अज्ञान की निद्रा से सुषुप्त नगरवासियों के लिए शंखनाद के समान है। ये धर्मगुरु जब अपनी ओजस्वी एवं सुमधुर वाणी में धर्मोपदेश करते हैं तब श्रोताओं के ज्ञान चक्षु खुल जाते हैं। इनका धर्मोपदेश प्राणियों को सांसारिक मोहबंधनों का परित्याग कर आत्मकल्याण की ओर प्रवृत्त करता है। श्री जुगलकिशोर जी ने अपनी 'देव, शास्त्र, गुरु, पूजा' में धर्म गुरुओं के इसी उपकार का वर्णन करते हुए लिखा है-

स्याद्वादमयी तेरी वाणी,
शुभनय के झरने झरते हैं
उस पावन नौका पर, लाखों,
प्राणी भववारिधि तिरते हैं.
अन्तर ज्वाला हरती वाणी,
मानो झड़ती हों फुलझड़ियां
भवबंधन तड़ तड़ टूट पड़ें,
खिल जावें अन्तर की कलियां.

ये धर्मगुरु ज्ञान अंजन की शलाका से, अज्ञान के तिमिर से, अंधे प्राणियों के नेत्रों को खोलने में समर्थ होते हैं-

अज्ञानतिमिरान्धाना ज्ञानांजन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

(2) धर्मगुरुओं का जीवन आचरण की प्रयोगशाला है। नगरवासी जब त्याग और तपस्या के धनी धर्म गुरुओं की कठोर जीवनचर्या को अपने नेत्रों से देखते हैं तब उसका प्रभाव उनकी अन्तरात्मा पर पड़ता है और वे भी शनैः शनैः व्रत नियमों की साधना करने लगते हैं।

(3) सामाजिक उत्थान की दृष्टि से भी धर्मगुरुओं का नगरों में आगमन उपयोगी है। धर्मगुरुओं की प्रेरणा से अनेक नगरों में स्थापित औषधालय, विद्यालय, शोध पीठ, अनाथाश्रम, विधवाश्रम, धर्मशालाएं - इस तथ्य का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। वाराणसी का स्याद्वाद विद्यालय, सागर का वर्णी विद्यालय, ईसरी का उदासीन आश्रम, श्री महावीर जी में स्थित ब्रह्मचारिणी कृष्णाबाई चंदाबाई जी द्वारा स्थापित श्री जैन बाला विश्राम, हस्तिनापुर का त्रिलोक शोध संस्थान, देहली स्थित कुन्दकुन्द भारती, इंदौर स्थित कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ आदि संस्थाएं समाज का कितना बहुआयामी कल्याण कर रही हैं- यह सर्वविदित है।

(4) जहाँ-जहाँ संतों का पदार्पण होता है वहाँ प्राचीन जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार तथा नवीन देवालयों एवं तीर्थों का निर्माण सुगमता से सम्पन्न हो जाता है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना, इन्दौर में गोम्मटगिरि का निर्माण, बावनगजा में भगवान आदिनाथ की विशाल प्रतिमा आदि विदुषी तपस्विनी आर्यिकाओं के धर्मोपदेश, स्त्री-समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा अंधविश्वासों का निराकरण करने में सक्षम सिद्ध होते हैं।

(5) शहरों में धर्म गुरुओं का आगमन जैन धर्म की प्रभावना में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। जब कोई समताधारी विद्वान तपस्वी नगर के मध्य अपने मुखचन्द्र से धर्मामृत की वर्षा करता है तब अन्य धर्मावलंबी भी उसके उस उपदेशों से प्रभावित हो जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रति आस्थावान हो जाते हैं। स्पष्ट है कि जैन धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए धर्म गुरुओं का नगरों में आगमन आवश्यक है।

(6) नगरों में धर्मगुरुओं का आगमन समाज के पारस्परिक मनोमालिन्य और विघटन को भी दूर करने में सहायक है। धर्मगुरुओं का स्नेहसिक्त वात्सल्यपूर्ण उद्बोधन विरोधी पक्षों की कटुता को दूर कर उन्हें मैत्री और एकता के सुदृढ़ बंधन में आबद्ध कर देता है।

जैन धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म भी ईश्वर प्राप्ति में गुरु की महत्ता को मुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं। प्रसिद्ध संत कवि कबीर ने कहा है -

सद्गुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपकार
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावणहार

सूफी कवियों की प्रेम साधना तो गुरु के बिना असंभव ही है -

गुरु विरह चिनगी जो मेला
जो सुलगाय लेय सो चेला

- जायसी

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि धर्म गुरुओं का पदार्पण जहां कहीं भी होता है वहां जंगल में मंगल हो जाता है। समस्त पर्यावरण शुद्ध हो जाता है, धरती धन्य हो जाती है, ईर्ष्या, द्वेष, विरोध, कटुता जैसे दूषित मनोविकार शांत हो जाते हैं। सुख, शांति, समरसता चतुर्दिक वातावरण में व्याप्त हो जाती है। धर्म-प्रचार, सामाजिक कल्याण, नवनिर्माण के विविध आयाम प्रकट हो जाते हैं। कहना न होगा- धर्मगुरुओं के आगमन से इसी धरती पर स्वर्ग उतर आता है।

तुम सा दानी क्या कोई हो। जग को दे दी जग की निधियां
दिन रात लुटाया करते हो। सम-शम की अविनश्वर मणियां।

ऐसे पतित पावन धर्म गुरुओं के चरणों में मेरा शत-शत नमन, वंदन, अभिनंदन

हे शांति, त्याग के मूर्तिमान
शिवपथ-पंथी गुरुवर प्रणाम।

जीवन को उन्नत और ऊँचाई पर ले जाने के लिए धर्म ही एकमात्र साधन है।

अजातशत्रु, असाधारण व्यक्तित्व के धनी गणेशप्रसाद जी वर्णी

जन्म जयंती पर याद किये गये संत गणेशप्रसाद जी वर्णी

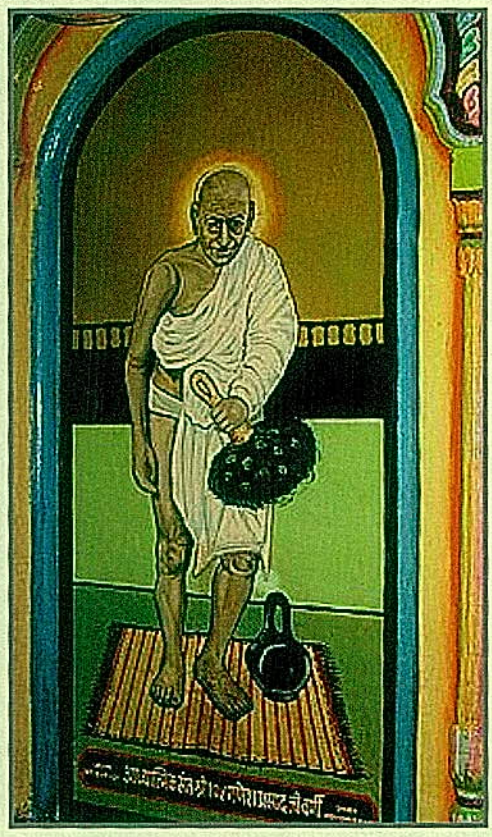

ललितपुर जनपद में जन्मे वर्णी जी ने पूरे देश में विद्यालय, महाविद्यालयों की स्थापना कर देशभर में जगायी प्राच्य विद्याओं की अलख

ललितपुर । जैन विद्या उन्नायक, प्राच्य विद्याओं के संरक्षणकर्त्ता परम पूज्य गणेशप्रसाद जी वर्णी की जन्म जयंती के अवसर पर समाजसेवा में अहर्निश तत्पर प्रभावना जनकल्याण परिषद रजि0 के तत्वावधान में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं ने वर्णीजी द्वारा दिये गये योगदान को रेखांकित किया गया।

इस अवसर पर संस्कृत मनीषी सुरेन्द्र जैन केवि ने कहा कि एक ही जीवन में साधारण से असाधारण कैसे बना जा सकता है इसका निदर्शन देखना हो तो गणेशप्रसाद जी वर्णी का जीवन देखें। धर्म और समाज के नाम पर प्रचलित रूढियों ने गणेशप्रसाद जी वर्णी के हृदय में धर्म ज्ञान की ऐसी उत्कट इच्छा उत्पन्न की कि वे संस्कृत पढने के लिए मुंबई, जयपुर, खुरजा, मथुरा, वाराणसी आदि नगरों को सब प्रकार के कष्ट उठाते हुये गये। हजारों मील की पैदल यात्रा की।

महामंत्री डा0 सुनील संचय ने कहा कि वर्णीजी के दयालुता, निर्लोभिता, दृढता आदि गुणों की अपेक्षा उनकी अजातशत्रुता लोकोत्तर है। पूरे जीवन संघर्ष करके इन महामानव ने किसी के प्रति द्वेषभाव अपने मन में नहीं आने दिया। दोष से घृणा करो, दोषी से नहीं, इसका कार्यरूप देखना है तो वर्णीजी के पास देखा जा सकता था। देश जाति धर्म वर्ग आदि के भेदभाव इनके पास भी नहीं फटके हैं। वर्णी जी खुद अपने आपमें एक संस्था थे। उन्होंने जैन विद्या के प्रचार प्रसार में जो योगदान दिया है वह अतुलनीय है।

निर्मल शास्त्री ने कहा कि अपनी निरीह और कष्ट सहिष्णु वृत्ति के बल पर गणेशप्रसाद जी ने सिघैन चिरोंजाबाई जी को धर्ममाता के रूप में और उनकी लाखों की सम्पत्ति सुलभ हो जाने पर भी वे उससे दूर ही रहे। नागरिक क्षेत्र सुलभ होने पर भी वर्णीजी ग्रामों को अपना कार्यक्षेत्र बनाते हैं और सैंकडों ग्रामों में पाठशलाएं, विद्यालय स्थापित करा देते हैं। स्थानीय लोग संस्था के अधिकारी बनने के लिए अनुनय विनय करते हैं, पर वर्णीजी निर्लिप्त ही रहते हैं और स्थानीय लोगों को अधिकारी बनाकर कार्यकर्त्ताओं की सेना खडी कर देते हैं।

सोमचंद्र शास्त्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति ऋषियों की देन है यह वर्णीजी को देखकर भलीभांति समझ में आ जाता है। वर्णीजी अपने त्याग और सेवामय जीवन द्वारा हमें बता रहे हैं कि मानव के उद्धार का मार्ग आत्मविद्या और परोपकार है, कोरा विज्ञान तथा सुख सामग्री नहीं है।

पुष्पेन्द्र जैन ने कहा कि वर्णीजी का जन्म मडावरा के पास हंसेरा ग्राम के निवासी हीरालाल असाटी के घद हुआ था। बाद में परिवार मडावरा आकर रहने लगा। प्रारम्भिक शिक्षा वर्णीजी की मडावरा में हुयी।

विनीत जैन ने कहा कि वर्णीजी द्वारा देश के अनेक गांवों और नगरों आदि में विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित विद्यालयों, महाविद्यालयों में अध्ययन कर हजारों छात्र आज समाज, देश की सेवा में संलग्न हैं। बुंदेलखण्ड में बरूआसागर, सागर, साढुमल, ललितपुर आदि अनके स्थानों पर वर्णी जी ने विद्यालयों की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। संस्कृत, प्राकृत आदि प्राच्य विद्याओं के संरक्षण और संवर्द्धन में वर्णी जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। जैनियों के गांधी थे पूज्य गणेशप्रसाद वर्णी जी।

इस अवसर पर अक्षय अलया, प्रदीप जैन, सुनील सोजना, संतोष शास्त्री, मुकेश जैन, राजेश जैन, शीतलचंद्र जैन, धर्मेन्द्र जैन, प्रकाशचंद्र जैन, उमेश, हरीश, मनीष जैन, सुरेश जैन, ध्रुव जैन, संजीव आदि अनेक लोगों ने अपने विचार रखते हुए वर्णी जी के योगदान को रेखांकित किया।

संचालन सुनील संचय ने किया। आभार सुरेन्द्र जैन ने व्यक्त किया तथा मंगलाचरण प्रियंका जैन ने किया।

साढूमल में विद्यालय के संस्थापक वर्णी जी की जयंती उत्साह पूर्वक मनायी

साढूमल, ललितपुर। साढूमल में सन् 1917 में न्यायाचार्य तपोमूर्ति आध्यात्मिक संत गणेशप्रसाद जी वर्णी जी द्वारा स्थापित श्री महावीर दिगम्बर जैन उच्चतर संस्कृत विद्यालय में आज संस्थापक की जन्म जयंती विविध आयोजनों के साथ समारोह पूर्वक मनायी गयी।

प्रात: काल जहां विद्यालय के छात्रों द्वारा प्रभातफेरी निकाली गयी वहीं विद्यालय प्रागंण में आयोजित समारोह में वक्ताओं ने वर्णी जी के योगदान पर प्रकाश डाला। उल्लेखनीय है कि उक्त विद्यालय से अध्ययन कर निकले हजारों छात्र आज देश और समाज के सेवा में महत्वपूर्ण पदों पर पदासीन हैं। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक देवेन्द्र जैन झण्डा वाले, मंत्री कमल जैन, प्राचार्य विनीत शास्त्री, ट्रस्टी श्रीनंदन जैन, व्याख्याता पं0 संतोष सौरई, सुरेश शास्त्री व्याकरणाचार्य, राजेन्द्र जैन, गुलाबचंद्र जैन, शिक्षिका तृप्ति जैन, राजुल जैन, मनोहरलाल जैन आदि का योगदान महत्वपूर्ण रहा।

उधर मडावरा स्थित वर्णी पूर्व माध्यमिक विद्यालय में भी वर्णी जयंती का आयोजन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें विद्यालय के बच्चों ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। आयोजन का शुभारंभ वर्णी जी के चित्र पर पुष्पांजलि के साथ हुआ।

अंतर्मना स्वर्णिम सम्मेदशिखरजी यात्रा

03 अक्टूबर से 08 अक्टूबर 2014 पदमपुराजी से सम्मेदशिखरजी

अंतर्मना मुनिश्री 108 प्रसन्नसागरजी महाराज

प.पू.मुनिश्री अंतर्मना प्रसन्नसागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से प्रतिवर्ष **तीर्थराज सम्मेदशिखरजी की अंतर्मना स्वर्णिम यात्रा** संचालित की जाती है। यह क्रम अनवरत 12 वर्षों से चल रहा है। मुनिश्री अपने वर्षायोग स्थान से प्रतिवर्ष सम्मेदशिखर जी की वंदना के लिये स्पेशल ट्रेन द्वारा समस्त सुविधाओं के साथ धर्मानुरागीजनों को पुण्यसंचार्जन करने हेतु भेजते हैं।

इस वर्ष **मुनिश्री प्रसन्नसागरजी महाराज ससंघ** का वर्षायोग महती धर्मसाधना के साथ **अतिशय क्षेत्र पदमपुरा बाड़ाजी (राजस्थान)** की पुण्य भूमि पर **84 दिवसीय मौन साधना एवं उपवास व्रतों** के साथ चल रहा है। इस वर्ष यात्रा का **13वाँ स्वर्णिम वर्ष है।**

मुनिश्री की मौन साधना की पूर्णता के दिन 03 अक्टूबर 2014, शुक्रवार को दोपहर 1.30 बजे मुनिश्री के विशेष आशीर्वाद एवं यात्रा संस्कार विधि के साथ अंतर्मना स्वर्णिम यात्रा प्रारम्भ होगी।

सम्पूर्ण यात्रा के संघपति **श्री निलेश-सोनालीजी अजमेरा, मुंबई** (सुपुत्र-श्री पवनकुमारजी-चन्दादेवी अजमेरा, बड़नगर वाले) होंगे। यात्रा 03 अक्टूबर को रात्रि 7.30 बजे शिवदासपुरा, जयपुर रेलवे स्टेशन से स्पेशल वातानुकूलित रेल द्वारा सम्मेदशिखर जी के लिये प्रस्थान करेगी।

यात्रा हेतु विशेष तैयारियां की गई, जिसमें सम्पूर्ण रेल को सजाया जायेगा, स्टेशन पर संघपति परिवार द्वारा सभी यात्रियों का विशेष सम्मान किया जायेगा। सभी यात्रियों को सभी टोंकों पर महत्व के हिसाब से द्रव्य सामग्री समर्पित (चढ़ाने) करने हेतु अलग-अलग पोटलियां प्रदान की जायेंगी।

सम्पूर्ण यात्रा का संचालन **अंतर्मना पद्मप्रभु गुरु भक्त परिवार'** द्वारा किया जा रहा है। यात्रा 08 अक्टूबर 2014 की रात्रि में पदमपुरा शिवदासपुरा वापस पहुँचेगी।

- डॉ. संजय जैन, इंदौर

दरार पड़ने से मांगीतुंगी की यात्रा बाधित

यह जानकारी दी जाती है कि रास्ते में दरार पड़ने से मांगीतुंगी पहाड़ की यात्रा बंद कर दी गई है। इसे ठीक कराने में लाखों रुपये खर्च होने का अनुमान है। समाज से निवेदन है कि कृपया अपनी सहयोग राशि मांगीतुंगी जी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र के नाम से देना बैंक ताहाराबाद खाता नं. 067210003308 IFSC Code No. BKDN0520672 अथवा स्टेट बैंक आफ इंडिया शाखा पारोला खाता नं. 11502642754 IFSC Code No. SBIN 0000297 में भेज सकते हैं।

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें - 09422754603, 07588711766

मांगीतुंगी दिग.जैन सिद्धक्षेत्र कमेटी
एवं कार्यकारिणी कमेटी
मांगीतुंगीजी - 423 302, तह- सटाणा,
जिला - नाशिक (महाराष्ट्र)

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है।

दिल्ली परिक्रमा - क्षमावाणी पर्व

प्राकृतिक शोभा से आच्छादित दिल्ली इन दिनों धर्मनगरी बनी हुई है। यहां लगभग दो सौ जिनालय हैं, इनके अलावा और भी हजारों मन्दिर हैं, जहां प्रतिदिन लाखों नर-नारी अपना मस्तक झुकाते हैं और सुख-शान्ति से जीना चाहते हैं। पिछले अंक में हमने दिल्ली में जैन संतों के चातुर्मास की भक्ति रूपी पवित्र गंगा में अवगाहन कराया था। इस महीने सम्पूर्ण दिल्ली दशलक्षण और क्षमावणी से सरोबार रही। प्रत्येक जिनालय में क्षेत्र के लोगों ने भक्तिपूर्वक देव दर्शन, पूजा-पाठ किये। सभी मंदिर भक्तों की भीड़ से ठसाठस भरे थे। संतों के प्रवचन सुनते। हमारे संतों ने जन-जन को पूजा-पाठ और मन्दिर-दर्शन के लिये प्रेरित किया है। मान्यवर महानुभाव, आपको बता दें कि एक बार एक मुनि महाराज के आहार के समय बिल्ली, नेवला, शेर, जंगली सूअर वहां उपस्थित थे। उन पशुओं के मन में भाव जागृत हुआ कि यदि हम भी मनुष्य होते तो हम भी आहार देते। सिर्फ उन जानवरों ने अनुमोदन किया तो उससे उनके मन पर जो संस्कार पड़े, उसके फलस्वरूप भरत बाहुबलि ऋषभसेन आदि आदिनाथ के चार पुत्रों के रूप मे जन्में। महानुभावों मात्र अनुमोदना करने से इतना बड़ा फल तब रोजाना पूजा-दर्शन, प्रवचनों से कितना पुण्य प्राप्त होगा। दशलक्षण पर्व पर हमारे संतों ने आलस्य छुड़वाकर, सुख-शान्ति का मार्ग बताया है। हम आपको ले चलते हैं दिल्ली जहां अनेक संत व माताजी विराजमान हैं। क्षमावाणी उन्हीं के शब्दों में-

मान व त्याग का नाम क्षमावाणी है

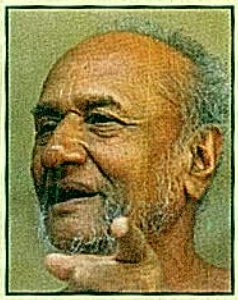

- श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंदजी (कुंदकुंद भारती)

दशलक्षण और क्षमावणी पर्व की शुरुआत करने हम आपको ले चलते हैं कुन्दकुन्द भारती जहां विराजमान हैं प्रज्ञा मनीषी श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानन्द मुनिराज। वे अज्ञान अंधकार का नाश करने वाले अनेक गुणों के स्वामी हैं। गुणों में अग्रशील और चारित्रचक्रवर्ती हैं। सूर्य के समान तेजस्वी आचार्यश्री को नमन करते हैं।

चलती-फिरती लाइब्रेरी, मस्तिष्क में समाया हुआ विश्वकोष, सभी ग्रन्थों का निचोड़ जिह्वा पर रखने वाले, इस सदी के महान श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंदजी मुनिराज क्षमा को वीरों का आभूषण ही मानते हैं। उनके अनुसार क्षमा का मुकुट वीर को ही शोभा देता है। कायर के मुख में क्षमा शब्द नहीं होते। बहुमूल्य रत्न को कमजोर की हथेली पर कौन रहने देता है? क्षमा रूप महामणि को महाप्राण ही धारण कर सकता है। न कोई उपवास करना होता है, न कोई व्रत करना होता है, न कोई तपस्या करनी होती है और न ही मंदिर में जाकर माला जपनी होती है, बस मान व क्रोध को त्यागना होता है। इसी क्रोध व मान का त्याग क्षमावाणी है।

त्याग से क्षमा की ताकत बढ़ती है

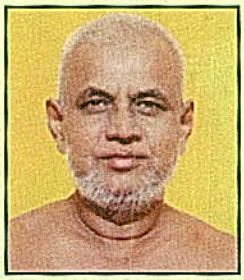

- आचार्य श्री सूर्य सागरजी (नोएडा सेक्टर-27)

बात 1998 में करवा की है। किसी नौकर के हाथ से पत्थर छूटकर मेरे पैर की अंगुली पर तड़ाक से गिरा और अंगुली में फ्रैक्चर हो गया। समाज के लोगों ने बार-बार पूछा कि महाराज बताओ किसने गुस्ताखी की है। मेरे तो फ्रेक्चर हो ही गया था, मैं चुप ही रहा। क्योंकि संत कर्म को ही दोषी मानता है। सच्ची क्षमा तो कर्म को नाश करने में ही है। 18 साल पहले की राजस्थान की ही बात है। मंदिर की दुकान थी, उसकी वजह से झगड़ा हुआ, मंदिर में बर्तनों से मार-पिटाई हुई, फौजदारी मुकदमा दर्ज हो गया। 18 श्रावकों के नाम केस हुआ। आचार्य धर्म सागरजी संघ इस विरोध को खत्म करने के लिए बिना आहार किये विहार कर गया। कई संत उपवास कर चले गये, पर विवाद जस का तस रहा। मैंने दोनों समुदायों को बुलाया। कल्याण का मार्ग बताया और कहा गुरु के न्याय को मानोगे या उसका उल्लंघन करके न्यायपालिका का न्याय मानोगे। पहले समाज से कहा कि सबूत प्रकट करें, पर वो नहीं कर पाये। दुकान पर कब्जे वालों को दुकान दे दी और उससे फौजदारी मुकदमा वापस करने को कहा। मुकदमा खत्म हुआ। ध्यान रखो त्याग से ही क्षमा की ताकत बढ़ती है।

सब मिलकर रहो, यही दशलक्षण पर्व का संदेश है

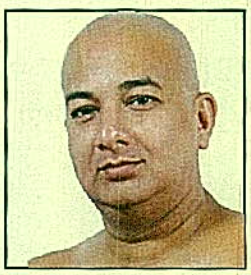

- एलाचार्य श्री अतिवीरजी (कृष्णानगर, दिल्ली-51)

अपने ऊपर किसी उपसर्ग के प्रसंग को बताने से एलाचार्य श्री अतिवीर जी मुनिराज ने स्पष्ट मना कर दिया। उन्होंने कहा कि ये बताने, दिल में रखने के लिए नहीं होते। पर हां, मैंने समाज को एक करने के लिए अनेक प्रयास किये हैं। मेरे कारण समाज में अलगाव हो ऐसा कभी नहीं होने दिया। पिछले वर्ष 2013 का चातुर्मास देख लो। शक्तिनगर में जो अलग थे, बंट गये थे, मेरे जाने पर एक ही जगह आ गये। उनके दिल से मन मुटाव मिटा या नहीं, यह तो नहीं कह सकता, क्योंकि मैं अवधिज्ञानी नहीं। पर व्यावहारिक रूप में सब मिलकर रहे। आज भी एक हैं। दशलक्षण पर्व का यही संदेश है।

स्वाध्याय करने से साधना में निखार आता है।

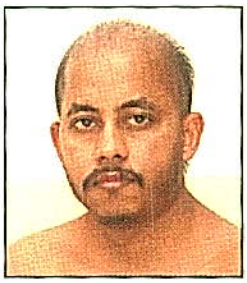

झगड़े भूल, गले लगो

- एलाचार्य श्री प्रज्ञ सागरजी (मॉडल टाउन)

2006 में सेक्टर तीन, रोहिणी की बात है। दो भाई कई सालों से एक-दूसरे का मुख नहीं देख रहे थे। क्षमावाणी का मंगल उद्बोधन दिया और उसके बाद दोनों को समझाया और गले मिलाया। आज दोनों साथ-साथ काम कर रहे हैं।

2002 में जगदलपुर (जिला बक्सर) में समाज दो ग्रुप में बंटा था, आपस में झगड़ते थे। क्षमावाणी के दिन दोनों को इकट्ठा किया और प्रवचन से समझाया और दोनों को एक कर दिया।

गले मिले, क्षमा मांगो

- मुनि श्री प्रमुख सागर जी (राधेपुरी, दिल्ली-51)

दूसरी जाति का या कोई दूसरा व्यक्ति, उपसर्ग करे गाली दे, तो उसके प्रति हमारे क्षमा के भाव रहते हैं कि वो नासमझ है। पर जब अपने ही समाज के लोग, अपने ही साधर्मी भाई, अपने ही लोग आलोचना, उपसर्ग, निंदा अपशब्द आदि करते हैं, तब बात दिल में घर कर जाती है। उस बात को निकालना, साधु की बड़ी सफलता है।

वैसे तो हर समाज में क्षमा का असर दिखता है। पिछले साल 2013 में अम्बाला में चातुर्मास हुआ। अध्यक्ष और पूर्व अध्यक्ष में बातचीत बंद थी। क्षमा पर मेरे प्रवचन के प्रभाव से दोनों एक दूसरे से गले मिले और एक-दूसरे से क्षमा मांगी। कम से कम बाहर से तो एक हुए।

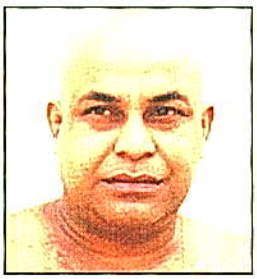

क्षमावाणी आचरण का प्रतीक

- मुनि विहर्ष सागरजी (इंदिरापुरम)

अभी कुछ दिन पहले इंदिरापुरम में ही छोटे महाराज मुनि विहसंत सागरजी आहार के लिये जा रहे थे, तब किसी ने उन पर पानी डाल दिया। उसको पकड़ा, मारा-पीटा, पुलिस वाले ले गये। मैं स्वयं गया, उसे छुड़वाया और क्षमा कर दिया।

2001 में जगदलपुर की ओर विहार कर रहे थे। नक्सली प्रभावित क्षेत्र था, घने जंगल से गुजर रहे थे कि कुछ लोग आ गये, कहने लगे गांव में प्रवेश नहीं करना, वापस जाओ। मैंने पूरे संघ को शांत रूप से आगे चलने को कहा। उन्होंने धमकाया गांव में देख लेंगे। थोड़ी देर विहार करते जब हम पहुंचे तो उनका काला मुंह करके जुलूस निकाल रही थी पुलिस। पुलिस ने उनको हमसे अपशब्द कहते देख पकड़ लिया था। पुलिस ने उनको सजा देने के लिए मुझसे पूछा। मैंने कहा इन्हें छोड़ दो। पुलिस ने कहा - इन्होंने अपशब्द कहे थे। मैंने कहा कि इन्होंने कहा जरूर था, पर मैंने ग्रहण ही नहीं किया।

क्षमावाणी यानी मेरी आत्मा क्षमा बन गई और इसका स्वरूप बिगड़ कर क्षमावाणी हो गया। अब यह वाणी यानी केवल शब्दों में रह गया है, जबकि वाणी यानी आचरण का प्रतीक था।

सहनशील बनें

- आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी (भोलानाथ नगर)

आचार्य श्री ने कहा - आज छोटे बच्चों में, युवाओं में उबाल आ रहा है, क्रोध को शांत करें। जब क्रोध आए, तो थोड़ा धैर्य रखें, दो मिनट सोचें कि किसी ने उल्टा-सीधा कहा तो क्यों कहा। जो वह कह रहा है यदि सही है तो क्रोध क्यों? और अगर गलत कह रहा है तो वह अनजान है, उस पर क्रोध क्यों? यदि सही है तो समता, गलत है तो भी समता। क्रोध की सीमा बढ़ रही है। 10-15 वर्ष की उम्र में आत्महत्या की विकृत सोच सहनशीलता कम होने के कारण हुई है।

मुनि सुकुमार, मुनि सुकौशल, भगवान पार्श्वनाथ आदि के जीवन पढ़ने होंगे। मंदिरों में जगह-जगह चित्र लगाये हैं इनके उपसर्ग सहने के, सहनशील बने रहने के।

क्रोध का अभाव क्षमा भाव है

- आचार्य नमिसागरजी (कैलाश नगर गली नं.2)

क्रोध का अभाव क्षमा भाव है। क्रोध पर विजय पाने के संबंध में उनका कहना है कि ऐसे विपरीत समय में शांति का भाव बनाएं। क्रोध को कम करना या ज्यादा करना सामने वाले के नहीं, अपने हाथ में है। निमित्त को वे नहीं मानते। उन्होंने कहा मस्तिष्क में कुछ मत रखो, दिमाग को खाली कर दें। एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दोगे तो क्रोध नहीं आएगा।

धर्म केवल मंदिर में ही, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है।

सॉरी क्षमा का दूसरा रूप है

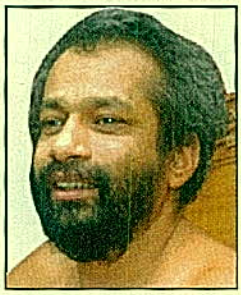

– आचार्य श्री श्रुतसागर जी (ग्रीन पार्क)

'ये सॉरी-मॉफी शब्द, क्षमा की परछाईं हैं। सॉरी आर्टिफिशियल क्षमा है, क्षमा का सब्सिट्यूट (substitute) है। वाचनिक, मानसिक, कायिक - तीनों को मिलाकर क्षमा होती है। क्षमा से शरीर रिलेक्स हो जाता है। सॉरी केवल वाचनिक क्षमा है। क्षमा वचन तक सीमित रह कर सॉरी रह जाता है। एक तिहाई हिस्सा है। मन से बोली गई सॉरी क्षमा का दूसरा रूप है।

आत्म साधना में रहो

– मुनि श्री अनुमान सागर जी (परेड ग्राउन्ड, लाल मंदिर)

पर्यूषण पर्व शाशवत् पर्व हैं इन पर्वों में आत्मविकास, आत्मानुशासन, आत्मजागृति के लिये श्रावक चिंतन करते हैं। खाने का संयम रखते हुए आत्म साधना में रत रहते हैं।

क्षमा सात्विक भाव है

– उपा. श्री ऊर्जयन्त सागरजी (भोगल)

उपाध्याय श्री ने कहा कि क्षमा न कोई दे सकता है, न कर सकता है। यह सात्विक भाव है, जो क्रोध के अभाव में पैदा होता है। इसलिए जीव का स्वभाव है। वर्तमान में मन, वचन, काय तीन प्रकार से क्षमा मांगते हैं। मन से जिसके प्रति अपने द्वारा मानसिक अपराध हुआ, वचन से जिसको कटु शब्द बोले, काय से जिसके प्रति हमने कोई अपराध किया।

क्षमावाणी आचरण का प्रतीक

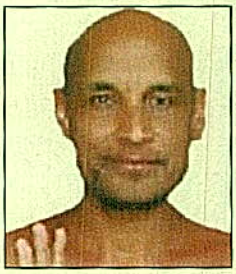

– आचार्य श्री सिद्धांत सागरजी (पालम गांव)

क्षमावाणी यानी मेरी आत्मा क्षमा बन गई और इसका स्वरूप बिगड़ कर क्षमावाणी हो गया। अब यह वाणी यानी केवल शब्दों में रह गया है, जबकि वाणी यानी आचरण का प्रतीक था।

क्षमा धर्म कोष-हृदय में पाया जाता है

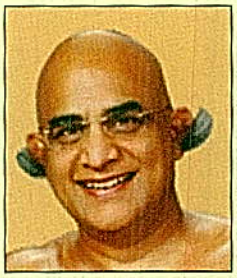

– उपा. श्री गुप्तिसागरजी (निर्माण विहार)

आज विश्व में सब ओर अनगिनत उत्तेजनाएं और ज्वलनशीलताएं अस्तित्व में हैं, तब सहिष्णुता का महत्व काफी बढ़ गया है। ध्यान रखिए, धर्म मनुष्य को सार्थक और सहिष्णु बनाता है। आप पर अनचाहा कुछ घटित हो और आप उसे विष की तरह हलक के नीचे उतार कर अमृत में बदलते हों, तो आपकी इस क्षमता को, जो इस तरह का अपूर्व करिश्मा कर रही है, सहिष्णुता का सम्बोधन दिया जायेगा। ऐसे सहिष्णुता के सर्वोच्च शिखर भगवान पार्श्वनाथ- महावीर सन्मति जो हमारे नयन पथगामी हैं।

सन्मति ही क्षमा का संदेश दे सकते हैं। दुर्मतियों को बात समझ में नहीं आती। क्षमा का नित्य नन्दनवन में रहना है और क्षमा रहित शुष्क दावानल में दग्ध होता है। क्षमा एक ऊंचा आचरण है जो समुन्नत संस्कृति के धर्म कोष-हृदय में पाया जाता है।

क्षमावाणी सौहार्द-सद्भावना का पर्व

– गणिनी आर्यिका श्री विन्ध्यश्री माताजी (सूर्य नगर)

सभी अपनी-अपनी कषाय निकाल दें और हृदय को माया, वक्रता, कुटिलता से अत्यन्त खाली करके अपने अन्दर क्षमा को लावें। यही क्षमावाणी पर्व मनाने की सार्थकता है। मिश्री की शुरुआत मिठास से होती है और अंत भी मिठास से होता है उसी प्रकार पर्यूषण का प्रारंभ उत्तम क्षमा से और क्षमावाणी पर्व हमें क्षमा और प्रेम के उस श्रेष्ठ धर्म को अपनाने की प्रेरणा देता है, जिसके आते ही प्राणी का जीवन भी पानी-पानी हो जाता है। इसलिए सभी पर्वों के बीच अपनी विशेषता रखने वाले पावन पर्व में क्षमावाणी का महत्वपूर्ण स्थान है।

– श्री किशोर जैन
मोबाइल : 09910690823

सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु पराजित नहीं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

सम्माननीय सदस्य

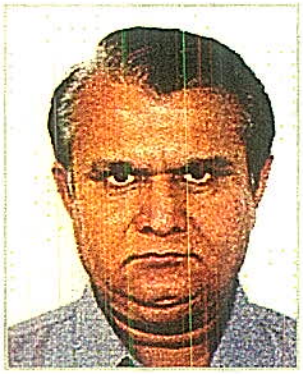

श्री मनहरलाल अमृतलाल मेहता, मुंबई

श्री संयम विमुक्त जैन, बैंगलोर

आजीवन सदस्य

Shri Chinnappa Chandranathan Jain, Kalla Kulathur

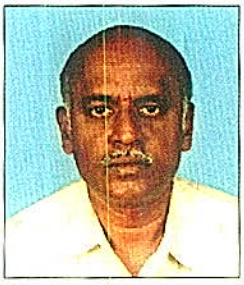

Shri Chandrakeerthy Jambukumar Jain, Tindivanam

Shri Dhanraj Adhinathan Jain, Tiruvannamalai

Shri Udayan Kumr Sreedhar Jain, Kilnachipet

Smt. Rosibai Sreyan kumar Jain, Mailam

Shri Kumar Mallinathan, Melmalaynur

Shri Vijay S/o Shri K.M.Jain, Delhi

Shri Sureshkumar Kasturchand Jain, Delhi

Shri Anil S/o Shri M.P.Jain, Delhi

Shri Subodh Attarchand Jain, Delhi

Shri Pramod Kumar Nahar Singh Jain, Baraut

Shri Brijlal Dalichand Jain, Mumbai

Shri Sunil Kumar Babulal Doshi, Mumbai

Shri Javerchand Dalichand Jain, Mumbai

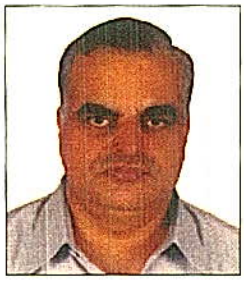

Shri Chandraprakash Dharamchand Gangwal, Indore

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

आजीवन सदस्य

Shri Anil S/o Dr. P.C.Bhadora, Tikamgarh

Shri Pradeep Satishchand Jain, Chandrapur

Shri Amit Kumar Prakashchand Jain, U.S.A.

Shri Atul Prakashchand Jain, Pune

Shri Sandeep Satishchandra Jain, Chandrapur

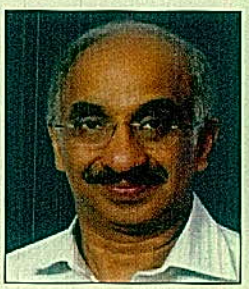
Shri Surendra Kumar Heggade, Bangalore

Smt. Anita Surendra Kumar, Bangalore

Shri V. Ravichandran, Kumbakonam

Shri Vinesh Inder Sain Jain, Delhi

Shri Inder Sain Mangelal Jain, Delhi

Shri Rishabh Vinesh Jain, Delhi

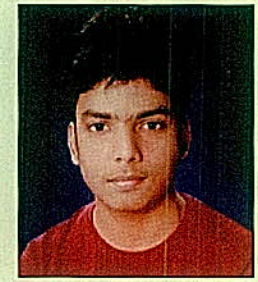
Shri Shubham Vinesh Jain, Delhi

Shri Atam Prakash Deepchand Jian, Delhi

Shri Bhushan Kumar Dharampal Jain, Delhi

Shri Tej Kumar Mannalal Jain, Jabalpur

Shri Hasmukhlal Maganlal Shah, Vadodara

Shri Pratik Maheshchandra Shah, Vadodara

Shri Jashwantlal Virchand Bhai Shah, Vadodara

Shri Manoj Kumar Khushalchand Jain, Delhi

Shri Chetan Kumar Shashikant Shah, B. Deoghar

Justice Abhay Gohil, Bhopal

Shri Utkarsh Kailash Doshi, Akluj

Shri Nilesh Kailash Doshi, Akluj

Shri Chetan Veerkumar Doshi, Akluj

Shri Abhijit Dhanyakumar Doshi, Akluj

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

Published on 16th of every month
RNI-MAHBIL/2010/33592
License to post without prepayment- WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2014-15 Jain Tirthvandana, English-Hindi September2014
Regd. No. MH/MR/South-316/2013-15, Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Post Office, Mumbai- 400 001
on 16th & 17th of every month.

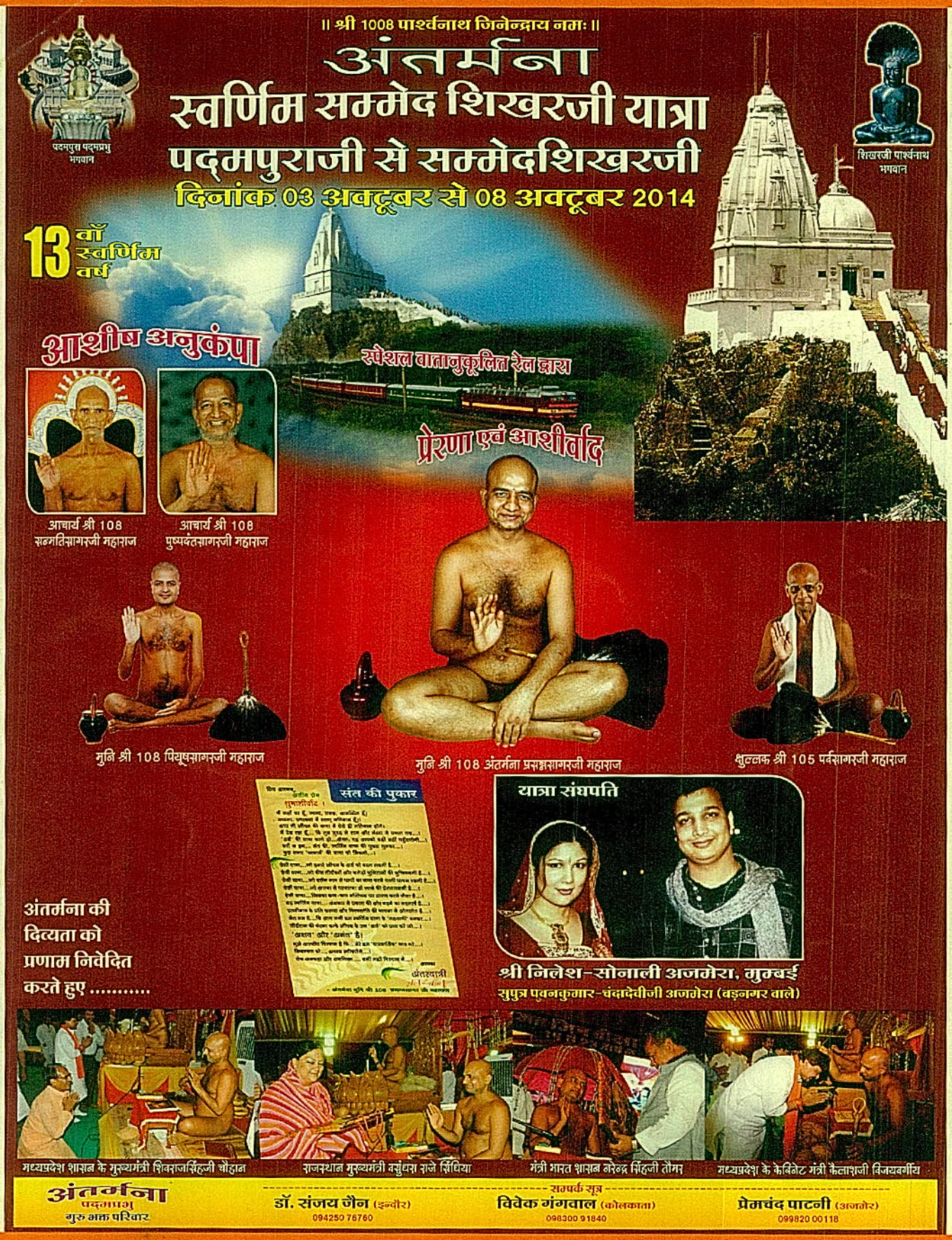

'प्रकाशक/मुद्रक/संपादक उमानाथ रामअजोर दुबे, मालिक-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004
द्वारा - त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी.रोड, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004. से मुद्रित कर
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई-400 004 से प्रकाशित किया गया है।'